सेन्ट्रल
कॉटेज
इण्डस्ट्रीज
एम्पोरियम

कॉटेज

कॉटेज दर्पण

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंक - 14 जनवरी - जून 2022

सैन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड

श्री कामरान रिजवी, आईएएस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (हडको) तथा अध्यक्ष (नराकास), कमोडोर महेन्द्र वीर सिंह नेगी, एनएम,(सेवानिवृत्त), प्रबंध निदेशक, सीसीआईसी को वर्ष 2020-2021 में राजभाषा सम्मेलन आयोजन हेतु शील्ड पुरस्कार सम्मान प्रदान करते हुए ।

श्रीमती दीप्ति बजाज , सहायक प्रबंधक, सीसीआईसी ने श्री कामरान रिजवी, आईएएस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (हडको) एवं नराकास दिल्ली उपक्रम-2 के अध्यक्ष के कर कमलों नराकास द्वारा वर्ष 2020-2021 में आयोजित ऑनलाइन कविता पाठ का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया ।

श्री सूरज पूरी, सहायक प्रबंधक, सीसीआईसी ने श्री कामरान रिजवी, आईएएस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (हडको) एवं नराकास दिल्ली उपक्रम-2 के अध्यक्ष के कर कमलों नराकास द्वारा वर्ष 2020-2021 में आयोजित दोहा पाठ प्रतियोगिता का तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री अमित अरोड़ा, सहायक प्रबंधक, सीसीआईसी ने श्री कामरान रिजवी, आईएएस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (हडको) एवं नराकास दिल्ली उपक्रम-2 के अध्यक्ष के कर कमलों नराकास द्वारा वर्ष 2020-2021 में आयोजित निबंध प्रतियोगिता का तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया ।

कॉटेज दर्पण

संरक्षक
कमोडोर महेन्द्र वीर सिंह नेगी,
एनएम (सेवानिवृत्त), प्रबंध निदेशक

सलाहकार
श्रीमती मीरा सोमानी, महाप्रबंधक

संपादक मंडल
राकेश कुमार सुन्दरियाल
मनीष सिंह
अनुराधा शेखर

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/विचारों/तथ्यों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए सीसीआईसी प्रबंधन उत्तरदायी नहीं है।

पत्रिका के उद्देश्यः सीसीआईसी के कर्मचारियों, उनके पारिवारिक सदस्यों के विचारों को लेखनी के माध्यम से बढ़ावा देना, उनके अंदर दबी प्रतिभा को उजागर करना, भारत की शिल्प कला के विषय में पाठकों को जागरुक करना, कॉरपोरेशन की आंतरिक गतिविधियों की जानकारी देना तथा पाठकों को रोचक एवं सुपाठ्य जानकारी उपलब्ध कराना है ।

संपर्क सूत्र :
हिंदी कक्ष
सीसीआईसी ऑफ इण्डिया लि.
बुनकर सेवा केन्द्र, भारत नगर
दिल्ली – 110052
दूरभाष – 9289225104

अंक 14, जनवरी–जून, 2022

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	02-09
2.	राजभाषा हिन्दी के प्रभाव कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका	10-13
3.	कोविड 19 से शिक्षा	14-16
4.	स्वच्छ हो गया भारत हमारा	16
5.	मातृ देवो -पितृ देवो भवः	17
6.	सीख अथवा ईमानदारी का पाठ	18-19
7.	भारत मे लकड़ी का खिलौना उद्योग	19-21
8.	भगवान - एक चित्रकार	21
9.	गलतफहमी और समझ	22-23
10.	मानवाधिकार	24-25
11.	कुदरत का खेल	25
12.	हिन्दी पखवाड़ा 2021 के पुरस्कार वितरण के अविस्मरणीय पल	26-27
13.	हिन्दी पखवाड़ा 2021 के पुरस्कार विजेताओं की सूची	28-29
14.	स्वास्तिक	30
15.	मेरा लेख	31
16.	चाँद पर जीवन क्यूँ नहीं है	32
17.	केले के अचूक उपाय	32
18.	फेंगशुई गाय को घर में रख कर प्राप्त करें सफलता	33
19.	सूर्य के शुभ अशुभ असर	34
20.	तुलसी का पौधा	35
21.	एक पूरी फार्मेसी का नाम है -अनार	36
22.	सेवानिवृत्त कर्मचारियों की सूची	37-38
23.	भारत मे लघु चित्रकारी का विकास	39

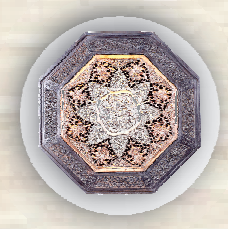

सत्यमेव जयते
हिंदी दिवस 2021
के अवसर पर माननीय
गृहमंत्री जी का संदेश
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

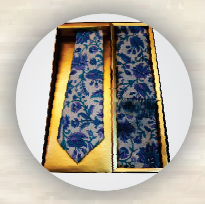

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पीयूष गोयल
PIYUSH GOYAL

सत्यमेव जयते

वाणिज्य एवं उद्योग,
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक
वितरण तथा वस्त्र मंत्री, भारत सरकार
MINISTER OF COMMERCE & INDUSTRY,
CONSUMER AFFAIRS, FOOD & PUBLIC DISTRIBUTION AND
TEXTILES, GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

हमारा देश भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषायी दृष्टिकोण से विविधताओं से परिपूर्ण है। इन विविधताओं से युक्त देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान भी हिंदी ने संपर्क भाषा का काम किया था। संभवत: इसीलिए संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की थी। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य सभी को यह बोध कराना है कि अपना सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करना हमारा संवैधानिक दायित्व है।

आज जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो हमें यह समझना होगा कि यह सपना अपनी भाषा के बल पर ही साकार किया जा सकता है। कोविड-19 महामारी के प्रकोप के कारण लगाए गए देशव्यापी लॉकडाउन ने वस्त्र क्षेत्र से जुड़े प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है। कोविड-19 महामारी के संकट से उबरने के लिए सरकार द्वारा बहुत सी प्रोत्साहन योजनाएं चलाई जा रही हैं। इस क्षेत्र से जुड़े कामगारों, दस्तकारों, शिल्पकारों, किसानों, उद्यमियों आदि के लिए बहुत सी सुविधाओं की पेशकश की गई है। इन सभी योजनाओं तथा सुविधाओं का लाभ हम देश के अधिकांश लोगों तक उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिंदी के माध्यम से ही पहुंचा सकते हैं। अत: मंत्रालय तथा इसके अधीनस्थ कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों को अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में काम करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करके वे न केवल सरकार की योजनाओं का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन करने में सहयोग करेंगे अपितु अपने अधीनस्थों को भी अपना सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रेरित करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर मंत्रालय तथा इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों में हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा/हिंदी माह आदि का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान कार्यालयीन कार्य से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं आदि का आयोजन होगा। मैं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील करता हूं कि वे इन प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लें और सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करके गौरवान्वित महसूस करें और देश का गौरव बढ़ाएं। इस अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पीयूष गोयल

पीयूष गोयल

Ministry of Commerce & Industry : Udyog Bhavan, Rafi Marg, New Delhi-110011
Tel. No. : +91 11 23062223, 23061492, 23061008, Fax : +91 11 23062947, E-mail : cimoffice@nic.in

कॉटेज

दर्शना जरदोश
Darshana Jardosh

रेल एवं वस्त्र राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State for
Railways and Textiles
Government of India

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी हमारे देश में सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। यह विविधता में एकता की परिचायक है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिंदी ने सभी को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया था। आजादी के बाद संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। इसी उपलक्ष्य में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को **हिंदी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

भाषा शासन और प्रशासन के बीच संवाद की मजबूत कड़ी का काम करती है। कोई भी देश अपनी भाषा के बिना अधूरा है, उसके बिना विकास की कल्पना तक नहीं की जा सकती। हिंदी अत्यंत सरल, बोधगम्य एवं वैज्ञानिक भाषा है। यह जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है। इसमें सभी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता है। आज के वैश्वीकरण और कंप्यूटरीकरण के युग में हिंदी अपने देश में ही नहीं, विदेश में भी अपना स्थान बना रही है। विदेशी कंपनियां अपने उत्पादों के प्रचार के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग कर रही हैं। ऑनलाइन व्यापार करने वाली कंपनियां हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। वे अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित कर रही हैं।

वस्त्र मंत्रालय के नियंत्रणाधीन कार्यालय देश के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं जहां विभिन्न प्रकार की भाषाएं तथा बोलियां बोली जाती हैं और हिंदी उनमें सर्वोपरि है। इसलिए हमें समस्त सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में करते हुए हिंदी के प्रचार प्रसार पर जोर देना चाहिए। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करके ही हम अपने देश को आत्म निर्भर और दूसरे देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने योग्य बना सकते हैं। चूंकि, वस्त्र क्षेत्र देश के आम नागरिकों से जुड़ा हुआ है जिनमें से अधिकांश लोग हिंदी को बोलने और समझने वाले हैं, इसलिए सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का प्रचार, विज्ञापन, पत्राचार आदि हिंदी भाषा में करके ही इनका लाभ हम उन तक पहुंचा सकते हैं। सबके साथ,सबके प्रयास से ही सबका विकास किया जा सकता है।

मेरी वस्त्र मंत्रालय एवं इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सभी संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों/सार्वजनिक उपक्रमों/बोर्डों आदि में कार्यरत सभी अधिकारियों, विशेष रूप से वरिष्ठ अधिकारियों से अपेक्षा है कि वे **14 सितंबर 2021 को हिंदी दिवस** के इस पुनीत अवसर पर यह संकल्प लें कि वे अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी में करेंगे।

दर्शना जरदोश.

14 सितंबर, 2021

(दर्शना जरदोश)

Ministry of Railways : Room No. 242, Rail Bhawan, New Delhi-110001, Phone : 011-23388190, 23382490, Fax : 011-23383668, Email : mos-railways@gov.in
Ministry of Textiles : Room No. 129, D Wing, Udyog Bhawan, New Delhi-110011, Phone : 011-23061385, 23063779, Fax : 011-23061575, E-mail : mos-textiles@gov.in
Constituency Office : 13/8-18, Surat Lok Sabha Jansampark Karyalay, Near New Court, Athwalines, Surat-395007 (Gujarat), Phone : 0261-2664488

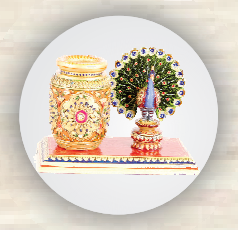

यू. पी. सिंह, भा.प्र.से.
सचिव
U. P. Singh, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
वस्त्र मंत्रालय
उद्योग भवन, नई दिल्ली - 110 011
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF TEXTILES
UDYOG BHAWAN, NEW DELHI - 110 011

संदेश

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

हिंदी न केवल भारत के संविधान द्वारा स्वीकृत राजभाषा है बल्कि भारतीय जनमानस के रीति-रिवाजों, विचारों और यहां की सभ्यता-संस्कृति की जीवंत परंपराओं की भी परिचायक है। यह देश के अधिकांश भू-भाग में प्रमुखता से बोली और समझी जाने वाली एक लोकप्रिय भाषा है। हिंदी की इसी समृद्धिशीलता ने विविधता में एकता का कार्य किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी के इसी महत्व को समझते हुए 14 सितंबर,1949 को इसे संवैधानिक दर्जा देकर गौरव प्रदान किया।

हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किए जाने का उद्देश्य यही था कि समस्त सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में किए जाएं। कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के समुचित कार्यांवयन के लिए बहुत से नियम और अधिनियम बनाए गए हैं। अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु बहुत सी प्रोत्साहन योजनाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। परंतु इतने प्रावधानों और व्यवस्थाओं के बावजूद अभी भी लोग सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को लेकर सहज नहीं हैं। हमें यह समझना चाहिए कि वस्त्र क्षेत्र का अधिकांश काम-काज देश के आम नागरिकों से जुड़ा हुआ है। हम अपनी नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों को उन तक प्रभावी रूप से तभी पहुंचा पाएंगे जब हम अपना सरकारी काम राजभाषा हिंदी में करेंगे।

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी में काम करना अब काफी आसान हो गया है। विभिन्न उपकरणों और हिन्दी सॉफ्टवेयरों के उपलब्ध हो जाने से अब अंग्रेजी जानने वाले अधिकारी/कर्मचारी भी अपना सरकारी काम-काज बेझिझक हिन्दी में कर सकते हैं। सकारात्मक सोच और प्रतिबद्धता के साथ हिंदी में काम करने का प्रयास करके ही हम कार्यालयों में हिंदी में काम को बढ़ावा दे सकते हैं।

हिंदी दिवस के अवसर पर वस्त्र मंत्रालय तथा इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों में हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा/ हिंदी माह आदि का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी। मुझे आशा है कि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इन प्रतियोगिताओं में ऊर्जा और उत्साह के साथ भाग लेंगे। मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप सभी सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे और इसे निरंतर बढ़ावा देते हुए भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे।

14 सितंबर, 2021

(उपेन्द्र प्रसाद सिंह)

Tel. : +91-11-23061769, +91-11-23063644 Fax : +91-11-23063681 E-mail : secy-textiles@nic.in

सीसीआईसी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

मुख्यालय
14 सितम्बर, 2021

कमोडोर महेन्द्र वीर सिंह नेगी,
एनएम, सेवानिवृत्त
प्रबंध निदेशक

अपील

कॉटेज परिवार के समस्त सदस्यों को "हिंदी दिवस" की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आप सभी को मालूम ही है कि 14 सितम्बर का दिन भारतीय संविधान में महत्वपूर्ण दिन है। 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने "देवनागरी लिपि" वाली हिंदी भाषा को भारतीय संघ की राजभाषा स्वीकार किया था। जिस प्रकार विश्व में अनेकों दिवस किसी न किसी रूप में मनाए जाते हैं उसी तरह भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर का दिन आदर एवं सम्मान दर्शाते हुए हिंदी दिवस के रूप में आयोजित किया जाता है।

मुझे खुशी है कि सीसीआईसी में अधिकांश कर्मचारी अपना दैनिक कार्य हिंदी में कर रहे हैं। हमारी राजभाषा नीति सरलता की है। प्रधानमंत्री जी भी सामाजिक और सरकारी हिंदी के अंतर को कम करने के पक्षधर हैं। हिंदी में काम करना आसान है। इसीलिए यह संपर्क भाषा बनी हुई है। कहावत है कि आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए, भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। मेरा मत भी यही है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में सीसीआईसी में "हिंदी पखवाड़ा" में विभिन्न प्रतियोगिताएं की गई हैं जिनका मूल उद्देश्य कार्यालय में हिंदी में काम करने का आदर्श वातावरण बनाए रखना, हिंदी में कार्य करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना और कार्मिकों को प्रोत्साहित करना है। मेरी अपील है कि आप हिंदी में काम करते रहें। राजभाषा के प्रयोग से कॉरपोरेशन और देश का सम्मान बढ़ता है। आइए, हम सब सरल हिंदी को अपने दैनिक जीवन में अपनाने का प्रण लें।

महेन्द्र नेगी

(कमोडोर महेन्द्र वीर सिंह नेगी, एनएम, सेवानिवृत्त)

राजभाषा हिंदी के प्रभाव कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका

डॉ. सुमीत जैरथ

राजभाषा अर्थात राज-काज की भाषा, अर्थात सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा । राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/ मंत्रालयों/ उपक्रमों/ बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए ।तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम् भूमिका रही है। राजभाषा अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो? इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर, 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी, 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पंक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा – हिंदी को और सरल, सहज स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान'(Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्ज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी/कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रोत्साहन (Encouragement)

मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में

यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों / विभागों /उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत अधिकारियों /कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – "आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है।" कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत-स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC-Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

प्रयोग (Usage)

'यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it)' हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है कि भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा

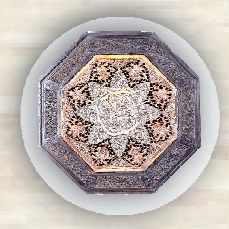

माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों का बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाव द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह-पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहां कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियां एकदम सटीक बैठती हैं कि –

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में

मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे विश्वास है कि इन दस 'प्र'को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने सफल होंगे।

सचिव
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

<u>प्रार्थना</u>

तुम माता तुम ही पिता, तुम ही सच्चे मीत ।
तुम ही धन सम्पदा, तुम ही से जग जीत ॥
करो कृपा श्री कृष्ण जी, धरें तुम्हारा ध्यान ।
तुम ही से जीवन हमारा, तुममें हैं मम प्रान ॥
हम भजते उस देव को, जिसे भजें त्रिदेव ।
भजें शारदा, शेष भी पार न पावें देव ॥
तुम अरूण निर्गुण प्रभु, नाम-रूप से दूर ।
जग तुम ही से जन्मता, तुम ही जग में पूर ॥
मुक्त करो भवबंध से करें तुम्हारा जाप ।
कर्म भक्ति और ज्ञान सब देने वाले आप ॥

नीरजा शर्मा
सहायक प्रबंधक

कोविड़ – 19 से शिक्षा

(हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना)

कोविड़ – 19 या कोरोनावायरस–कोरोनायरस वायरस की एक बडी फैमिली है जो ज्यादातर जानवरों व इंसानों में फैलती है। इंसानों में फैलकर ज्यादातर यह श्वास संबंधी बीमारी में तबदील हो जाती है जो कि इंसान के रैस्पीरेटरी सिस्टम को प्रभावित करती है। पूर्व में "मर्स"-MERS व "सार्स"-SARS ऐसे ही गंभीर वायरस रहे हैं।

कोविड़-19-चाइना के एक छोटे शहर वुहान से फैला यह वायरस इंसानों को अपनी चपेट में लेता जा रहा है। माना जाता है कि यह "सार्स"-SARS वायरस का ही एक रूप है जो कि 2019 से पहले कभी-भी जानकारी में नहीं आया और इसे वैज्ञानिको ने नोबल कोरोनावायरस जिसमें नोबल का तात्पर्य "नया" नाम दिया है और वर्ष 2019 दिसम्बर में शुरू होने पर इसे कोविड़-19 नाम दिया गया। यह भी श्वास संबंधी है जो कि हवा में फैलकर हर व्यक्ति में फैल रहा है।

कोविड़ – 19 बीमारी के लक्षण – इस बीमारी के शुरूआती लक्षणों से सूखी खांसी, जुकाम, बदन दर्द, सांस का रूकना, सूंघने की या स्वाद की पहचान न होना आदि हैं।

कोविड़ – 19 का फैलाव–इस बीमारी के फैलाव की बात करें तो चाइना के एक छोटे शहर वुहान में यह सर्वप्रथम इंसानों में शुरूआती लक्षण पाए जाए जो कि वहाँ परबढ़ते-बढ़ते आज पूरे विश्व में एक संक्रमित व्यक्ति से होते हुए कई गुणा व्यक्तियों को संक्रमित करता जा रहा है। आज पूरे विश्व में लगभग तीन करोड़ से अधिक व्यक्ति इस बीमारी से संक्रमित हैं।

कोविड़-19 बीमारी और भारत की स्थिति – आज लगभग दस माह बाद भारत में करीब 50 लाख लोग इस बीमारी से ठीक हो चुके हैं। परंतु दुखद बात यह है कि लगभग 90 हजार लोग इस बीमारी के काल का ग्रास बन चुके हैं और बीमारी अब अपनी चरम सीमा पर है। रोज़ाना लगभग 90,000 व्यक्ति इस बीमारी से संक्रमित हो रहे हैं।

कोविड़-19 का इलाज – क्योंकि यह बीमारी हाल ही में फैली है इसलिए लगभग सभी देशों के वैज्ञानिक इसकी दवाई या वैक्सीन नहीं बना पा सके हैं। इलाज की बात करें तो यह एक व्यक्ति जितनी अच्छी आंतरिक इम्यूनिटी रखता है वह उतनी ही जल्दी इस बीमारी को पहले चरण पर ही मात देकर स्वयं स्वस्थ हो रहा है। हालांकि भारत सरकार ने इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए आयुष काढ़ा आदि के सेवन को इस बीमारी से लड़ने में कारगर कहा है।

कोविड़ – 19 से शिक्षा- कोविड़ – 19 हालांकि एक बीमारी है परंतु इसने समाज पर विभिन्न प्रभाव डाला है व बचने के लिए शिक्षा प्रदान की है जैसे कि:

(i) **वैज्ञानिक / मूलभूत कमी** –विकसित देश कहे जाने वाले अमेरिका, ब्रिटेन आदि के वैज्ञानिक भी इस बीमारी के इलाज की दवाई बनाने में अभी तक सक्षम नहीं हैं और उन देशों की स्थिति भी आज एक विकासशील या अविकासशील देशों के समान ही है।

(ii) **सामाजिक दूरी** – इस बीमारी से बचने में एक मूलभूत कार्य सामाजिक दूरी ही है। यदि आपस में दूरी रखी जाए तो संक्रमित व्यक्ति के बोलने या छींकने पर उसके मुँह व नाक से निकलने वाले छोटे-छोटे कणों से बचाव हो सकता है जिससे वह दूसरे के शरीर में प्रवेश न कर सके। सरकार का यह नारा या श्लोगन अति प्रचलन में आया है "दो गज दूरी - बहुत जरूरी " । यदि संक्रमित व्यक्ति स्वयं को सामाजिक दूरी में रखने या एक बंद कमरे में रहे तो वह अनगिनत व्यक्तियों में संक्रमण फलाने से बच सकता है ।

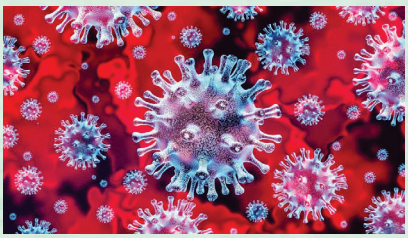

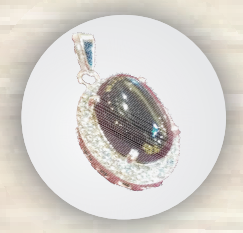

(iii) **प्रकृति में सुधार** – भारत सरकार ने 22 मार्च, 2020 से लगभग एक माह तक लोगों को घर से बाहर नहीं निकलने दिया व सभी व्यापारों को लगभग बंद रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रकृति में सुधार नज़र आया, हवा साफ हुई, नदी में फैलने वाला प्रदूषण कम हुआ अर्थात यह शिक्षा मिली कि यदि मनुष्य चाहे तो प्रकृति में सुधार ला सकता है अनावश्यक वाहनों का इस्तेमाल रोक कर।

(iv) **घर से कार्य** – भारत सरकार द्वारा घर से निकलने की पाबंदी अर्थात "लॉकडाउन" की स्थिति में अधिकतर कार्य घर से ही किया गया यानी वर्क फ्राम होम। यह कार्यप्रणाली भारत के लिए बिल्कुल नयी थी जो कि भविष्य के लिए कारगर साबित हो सकती है।

(v) **परिवार को समय** – आजकल लगभग सभी लोग अपने परिवार के साथ ही समय बिता रहे हैं और अनावश्यक घर के बाहर नहीं निकल रहे। पहले की भाग-दौड़ वाली जिंदगी में यह नहीं हो पा रहा था । इसलिए अब पूरा परिवार एक-साथ बैठकर खाना खा पा रहा है, बच्चों से अच्छी तरह विचारों का आदान-प्रदान कर पा रहा है। इसलिए परिवार के एकजुट होने की शिक्षा प्राप्त हो रही है।

(vi) **जंक फूड से बचाव** – इस बीमारी के डर से लगभग प्रत्येक परिवार जंक फूड या बाहर से खुले खाद्य सामग्री, पकवान आदि नहीं खा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप सेहत पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों से मुक्ति कुछ हद तक प्राप्त हो रही है।

(vii) **नए अस्पतालों का निर्माण** – भारत सरकार ने मरीजों की संख्या को भांपते हुए नए अस्थाई अस्पतालों को कुछ ही समय में तैयार किया है। रेलवे के डिब्बे भी अस्पताल व बीमार व्यक्ति के रहने के लिए उपयोग में लाए गए। इससे यह शिक्षा प्राप्त होती है कि अस्पताल की स्थिरता को नए तरीकों से लोगों के बीच लाया जा सकता है जिसमें चल-वाहन भी हैं जो जगह-जगह जा कर लोगों की जांच कर रहे हैं।

(viii) **ऑन-लाइन शिक्षा** –भारत सरकार के परिणाम स्वरूप कई महीनों से बंद पड़े स्कूलों की शिक्षा आज भारतीय छात्र घर बैठे-बैठे प्राप्त कर रहे हैं। आज भारत विश्व के अन्य विकसित देशों के समान ऑन-लाइन शिक्षा देने में सक्षम हो गया है व सरकार इसे आगे बढ़ाते हुए शिक्षा प्रदान कर रहा है।

(ix) **शारीरिक सफाई** – खाने से पहले 20 सैकण्ड हाथ धोना, मुंह पर मास्क लगाना, अनावश्यक आँखों, नाक-कान को छूना जैसे ख्याल आज प्रत्येक भारतीय के जीवन का रूप बन चुके हैं जो कि स्वयं को स्वच्छ रखने की एक अच्छी शिक्षा प्रदान करता है।

(x) **वैवाहिक खर्चों में कटौती** – सरकार द्वारा वैवाहिक कार्यक्रमों में 50 व्यक्तियों की सीमित संख्या करने पर सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा प्राप्त हुई है और वह यह कि अनावश्यक खर्चों में कटौती हुई है, भोजन की बर्बादी रूक गई है। आज एक गरीब परिवार भी एक सम्पन्न परिवार की तरह विवाह कार्यक्रम पूर्ण कर पा रहा है। दिखाने की प्रथा लगभग रूक सी गई है।

(xi) **डॉक्टरों, नर्सों का बलिदान** – आज जब बीमारी से बचने के लिए इंसान घर में छुपा बैठा है तब पूरे विश्व में डॉक्टरो व नर्सो ने संक्रमित व्यक्तियों के इलाज में कोई कमी नहीं छोड़ी है। ठीक होने वाला व्यक्ति इन्हें भगवान का दर्जा प्रदान कर रहा है। असल में आज इन सभी को अपने बलिदान के बदले लोगों के प्यार की शिक्षा प्राप्त हो रही है।

(xii) **यह अतिशयोक्ति नहीं होगा अगर हम कहें कि** -

"कोरोना दे रही ढ़ेरों सीख,
नए-नए पाठ, हर तारीख,
रहे हमेशा हम सब स्वस्थ और स्वच्छ
रोगों से फिर जाएँगे बच" ॥

अंत में यही कहूँगा कि कोविड़ – 19 एक बीमारी जरूर है परंतु इसने पूरे भारत को एक साथ ला खड़ा कर दिया है गरीबों, भूखे लोगों की मदद करना, बेजुवान जानवरों को भोजन – पानी देना, प्रधान-मंत्री के आह्वान पर पूरे भारत के लोगों द्वारा थाली बजाना,

मकान-मालिकों द्वारा किराया माफी, स्कूलों को सिर्फ ट्यूशन फीस ही देने का नियम, मास्क पहनना अनिवार्य करना, मंदिर-मस्जिद व पूजा के स्थल बंद होना व घर से ही इबादत-पूजा करना, विवाह में सीमित अतिथि होना, रात को होने वाली पार्टियाँ बंद होना, सरकार द्वारा घर-घर लोगों तक राशन पहुँचाना, डॉक्टरों से परामर्श हेतु ऑन-लाइन सुविधा देना, दवाइयों को भारत के बाहर अन्य देशों तक पहुँचाना, पीड़ित व्यक्ति को घर से ऐम्बुलेंस में ले जाकर कोविड़ – 19 बीमारी से बचाने का हर संभव प्रयास करना, लोगों द्वारा गरीब परिवारों को भोजन उपलब्ध कराना और कई अनगिनत कार्य आज यह शिक्षा प्रदान करते हैं कि चाहे अभी इस बीमारी का इलाज नहीं मिल पाया है परंतु कोई परिवार यह नहीं कह सकता कि इस बीमारी से बचने के लिए सरकार व अन्य संस्थाओं ने कोई कमी छोड़ी। यह बीमारी कभी न कभी खत्म अवश्य होगी परंतु लोगों के जीवन में एक नया सुधार लाने की शिक्षा अवश्य देकर जाएगी कि एक सामान्य जीवन जीना कोई मुश्किल कार्य नहीं हैं और यदि प्रत्येक व्यक्ति यह ठान ले कि वह दूसरों की मदद के लिए आगे आएगा तो भारत के सभी परिवार इस बीमारी को हरा कर जीत जाएँगे, अवश्य जीत पाएँगे।

अमित अरोड़ा

सहायक प्रबंधक

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

भावार्थ : आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते और न अग्नि इसे जला सकती है जल इसे गीला नहीं कर सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती ।

स्वच्छ हो गया भारत हमारा

स्वच्छ हो गया भारत हमारा
कोई शहर गंदा नहीं हमारा
बरसों की मेहनत रंग लाई
स्वच्छ अभियान ने सफलता पाई
मिलकर सबने हाथ बंटाया
स्वच्छ अभियान को सफल बनाया
साफ-सफाई रखेंगे
हम तंदरूस्त रहेंगे
सफाई से नाता जोड़ा
बीमारियों ने मुंह मोड़ा
हर गली हर सड़क और हर शहर
सफाई से दमक रहा है
स्वच्छता अभियान की सफलता
की गाथा गा रहा है ।
स्वच्छ स्वच्छ स्वच्छ मेरा भारत रहे
गंदगी का कहीं न नामो निशान रहे ।

"मातृदेवो-पितृदेवो भव"

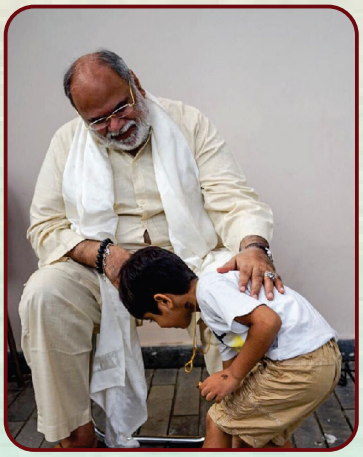

माता-पिता की सेवा करना हर एक का धर्म है। इस जीवन में हर किसी व्यक्ति को एक जीवन साथी / मित्र की आवश्यकता होती है जो उससे हमेशा प्यार करें और जीवन भर उसकी मदद करें। परंतु जीवन में माता- पिता से बढ़कर कोई नहीं है। वे बच्चों का पालन-पोषण तो करते ही है लेकिन साथ-साथ में उनके साथ खेलते हैं, कूदते हैं, दोस्त बन जाते हैं। बच्चों की देखभाल में ही वे जीवन मानते हैं। हर एक कठिनाई में उनके साथ रहते हैं और उनको मार्गदर्शन देते रहते हैं। उनकी कठिनाईयों को आसान बना देते हैं। ऐसे माता-पिता की सेवा करना बच्चों का बड़ा भाग्य होता है परंतु कभी–कभी यह हर किसी को प्राप्त नहीं होती है। माता-पिता की सेवा की प्राप्ति तब मिलती है जब वे बूढ़े होते हैं। तब तक वे अपने बच्चों की सेवा में ही रहते हैं। मनुष्य अपने जीवन में अनेक प्रकार के कार्यों व उत्तरदायित्वों का निर्वाह करता है। परंतु अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्य व उत्तरदायित्वों को वह जीवन पर्यन्त नहीं चुका सकता है। माता-पिता से संतान को कुछ भी प्राप्त होता है वह अमूल्य है। माँ की ममता व स्नेह तथा पिता का अनुशासन किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में सबसे प्रमुख भूमिका निभाते हैं। किसी भी मनुष्य को उसके जन्म से लेकर उसे अपने पैरों तक खड़ा करने में माता-पिता को किन-किन कठिनाइयों से होकर गुजरना पड़ता है इनका वास्तविक अनुमान संभवतः स्वतः माता या पिता बनने के उपरांत ही लगाया जा सकता है। हिंदू शास्त्रों व वेदों के अनुसार मनुष्य को 84 लाख योनियों के पश्चात मानव शरीर प्राप्त होता है। इस दृष्टि से माता-पिता सदैव पूजनीय होते हैं जिनके कारण हमें यह दुर्लभ मानव शरीर की प्राप्ति हुई। आज संसार में यदि हमारा कुछ भी अस्तित्व है या हमारी इस जगत में कोई पहचान है तो उसका संपूर्ण श्रेय हमारे माता-पिता को ही जाता है। यही कारण है कि भारत के आदर्श पुरूषों में से एक श्रीराम ने माता-पिता के इशारे पर युवराज पद त्याग दिया और वन चले गए। हमारी अनेक गलतियों व अपराधों को सहते हुए भी वे क्षमा करते हैं और सदैव हमारे हितों को ध्यान में रखते हुए सन्मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करते हैं। पिता का अनुशासन हमें दुर्जन का संग या कुसंगति के मार्ग पर चलने से रोकता है एवं सदैव विकास व प्रगति के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। यदि कोई बच्चा डॉक्टर, इंजीनियर व उच्च पद पर आसीन होता है तो उसके पीछे उसके माता-पिता का त्याग, बलिदान व उनकी प्रेरणा की शक्ति निहित होती है। माता-पिता की सदैव यही हार्दिक इच्छा होती है कि बच्चे बड़े होकर उनके नाम को गौरवान्वित करें। हमारी पौराणिक कथा में भी श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता की सेवा ऐसे की है कि आज भी श्रवण कुमार का नाम जनजनित है। अपने माता-पिता की सेवा में ही उसने अपनी संतुष्टता पायी है और उसमें ही धन्यताभाव पाया है। अपने दृष्टिहीन माता-पिता को अपने कंधों पर उठाकर तीर्थ यात्रा करवाया और उनका देखभाल करते-करते ही अपना जीवन उनके चरणों में समर्पित किया। वह आजकल के संसार में आदर्श व्यक्ति है। अतः जीवन पर्यन्त मनुष्य को अपने माता-पिता के प्रति कर्तव्यों व उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना चाहिए। माता-पिता की सेवा सच्ची सेवा है। उनकी सेवा से बढ़कर दूसरा कोई पुण्य काम नहीं है। हमारे वैदिक ग्रथों में इन्हीं कारणों से माता को देवी के समकक्ष माना गया है। माता-पिता की सेवा द्वारा प्राप्त उनके आशीर्वाद से मनुष्य जो आत्म-संतुष्टि प्राप्त करता है वह समस्त भौतिक सुखों से भी श्रेष्ठ है। "मातृदेवो भव, पितृदेवो भव" वाली वैदिक अवधारणा को एक बार फिर से प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है ताकि हमारे देश का गौरव अक्षुण्ण बना रहे

लक्ष्मी सुधीर

सहायक प्रबंधक

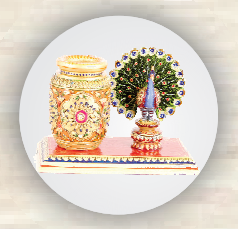

सीख अथवा ईमानदारी का पाठ

(हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना)

चित्र में हाथ में पोटली थामे व्यक्ति सेठ घनश्याम दास है और उसके सामने खड़ा उसका पुत्र मोहन है जिसकी उम्र 16-17 वर्ष है। मोहन अपने पिता से धन की पोटली लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाए हुए है और उसके पिता उसे नसीहत अथवा सीख देते हुए इस पोटली को वापिस जंगल में उसी पेड़ के नीचे वापिस रखने के लिए कह रहे हैं जहाँ से मोहन इसे उठा कर लाया था।

मोहन जब किसी कार्य हेतु शहर से गाँव लौट रहा था तो वह रास्ते में जंगल में पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए थोड़ी देर बैठ गया। अचानक से उसकी नजर वहाँ पर इस पोटली पर गई। उसने इधर-उधर देख कर यह पोटली उठा ली और इसे घर लाकर अपने पिता को सौंप दिया और मन ही मन खुश हो गया कि पिताजी यह धन की पोटली पाकर फूले नहीं समाएंगे। किन्तु हुआ विपरीत । पिता ने मोहन को ईमानदारी का महत्व बताते हुए कहा"लालच बुरी बला है"तथा कहा कि अपनी मेहनत और परिश्रम से कमाया हुआ धन ही जीवन में श्रेष्ठ होता है।

पिता पुत्र को समझा रहे हैं कि तुम यह पोटली उठा कर लाए हो। हो सकता है कि तुम्हारी कोई परीक्षा ले रहा हो कि तुम कितने ईमानदार हो अथवा बेईमान हो। मैंने जो इतने वर्षों तक तुम्हें ईमानदारी का पाठ पढ़ाया वह सब तुमने खत्म कर दिया। तुम यह किसी की मेहनत अथवा परिश्रम का धन उठा कर लाए हो।

मोहनः पिताजी, हो सकता है कि कोई चोर इसे वहाँ छोड़ गया हो।

घनश्यामः पुत्र, हुआ तो यह चोरी का माल ही ना ?

मोहनः पर पिताजी इसे हमने चुराया तो नहीं ना, अपितु यह तो हमें रखा हुआ मिला है।

घनश्यामः यह रखा हुआ धन किसी भी प्रकार से हमारा धन तो नहीं हुआ।

मोहनःहमने इसे किसी से छीना भी नहीं जहाँ पर रखा था बस उठाया है और ले आए हैं।

घनश्यामः इस धन की पोटली पर हमारा अधिकार सिद्ध नहीं होता।

मोहनः पिताजी इसमें अधिकार सिद्ध होना या न होना कोई बड़ी बात ही नहीं है।

घनश्यामः पुत्र मोहन, अधिकार केवल अपने द्वारा मेहनत से कमाई चीजों पर होता है न कि कहीं पर भी पड़ी वस्तु पर हम अपना अधिकार जमाएँ।

मोहनः पिताजी, यदि हम इस धन को वापिस वहीं पर रख कर भी आते हैं तो इस बात की क्या गारंटी है कि यह धन उसके मालिक के पास ही पहुँच जाएगा। हम रखकर आयेंगे तो हो सकता है कि कोई अन्य राहगीर इसे उठा लेगा।

घनश्यामः पुत्र हो सकता है कि इस पोटली का मालिक इसे वहाँ पर रख कर भूलवश इसे छोड़ कर आगे बढ़ गया हो याद आने पर वह वापिस इसे लेने अवश्य आयेगा।

मोहन इस बात पर सहमत हो गया कि ठीक है पिताजी इस पोटली को मैं वहीं उस पेड़ के नीचे वापिस रख आता हूँ। इस प्रकार का अनुचित कार्य नहीं करूँगा यह सीख आज मुझे अच्छी तरह मिल गई है। हमें लालच नहीं करना चाहिए। ईमानदारी और सत्यता हमारे जीवन के चरित्र को उजागर करते हैं।

चित्र में थोड़ी दूरी पर खड़ी जो अधेड़ साध्वी दिख रही है वह अन्नपूर्णा साध्वी जो कि उसी जंगल में महर्षि के आश्रम में रहती है और उनकी अर्धांगिनी भी है। उन्होंने ही यह धन की पोटली

उस वृक्ष के नीचे रख दी थी और उन्होंने छुपकर भी देखा था कि कौन-कौन से राहगीर इसे लालचवश उठा कर यहाँ से ले जायेंगे अथवा कौन नहीं?

सेठ घनश्याम दास जो कि एक सभ्रान्त परिवार से है उनका काफी नाम है शहर में, और वह ईमानदार भी है । अतः उनकी ईमानदारी की परीक्षा भी ली जाए और उनके पुत्र की भी परीक्षा इससे हो जाएगी कि वह किस प्रकार की सीख अपने पुत्र को देने में सफल रहते हैं अथवा असफल हो जाते हैं। धन-मोह मनुष्य का चरित्र गिरा देता है।

अतः मनुष्य को जीवन में सदा ईमानदार रहना चाहिए और इसे अपने चरित्र का अहम् हिस्सा मानकर अपने जीवन का आचरण करना चाहिए। चाहे कितनी ही विपरीत परिस्थिति हो, हमें अपना ईमान नहीं बिकने देना चाहिए।

एक पिता द्वारा चित्र में पुत्र को दी गई सीख शायद उसके चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और उसे एक अच्छा नवयुवक और सही पथ पर चलने वाला मनुष्य भी बनाएगी। अतः सदैव अपने बच्चों को जिन्दगी में सफल होने के लिए अच्छा पाठ पढ़ायें। तभी हम अपने माता- पिता होने का पूर्ण उत्तरदायित्व निभा पायेंगे।

बबीता देशवाल
सहायक प्रबंधक

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि॥

भावार्थ : जन्मने वाले की मृत्यु निश्चित है और मरने वाले का जन्म निश्चित है इसलिए जो अटल है अपरिहार्य है उसके विषय में तुमको शोक नहीं करना चाहिये।

भारत में लकडी का खिलौना उद्योग

(हिन्दी पखवाड़ा के दौरान 'ग' क्षेत्र में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना)

भारत में खिलौने बहुत प्राचीन काल से बनते आ रहे हैं जिसका प्रमाण हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त अवशेषों से भी मिलता है। ग्रीक और रोमन सभ्यताओं के प्राचीन केन्द्रों की खुदाई में भी प्राचीन काल के खिलौने प्राप्त हुए। इन प्रमाणों से यह पता चलता है कि खिलौने बनाना भारत की परम्परागत कला रही है। प्रथम महायुद्ध के पश्चात विदेशों से यांत्रिक खिलौने भारी संख्या में आने लगे जिससे इस उद्योग को बहुत आघात लगा। इसके पश्चात होने वाले राष्ट्रीय आन्दोलनों ने इस उद्योग को थोड़ा सहारा दिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकारी प्रयत्नों ने न केवल इस उद्योग को समाप्त होने से बचाया है बल्कि इसे आत्मनिर्भर बनाकर इसे विस्तार करने योग्य बना दिया।

खिलौने बनाने का उद्योग पूर्णतः घरेलू उद्योग है और सारे भारत में फैला हुआ है। इस उद्योग की एक विशेषता यह रही है कि यह बहुत से लोगों का पुश्तैनी पेशा रहा है और जिन स्थानों पर इस काम के पुश्तैनी करने वालों के कुछ परिवार रहते हैं उन्हीं स्थानों पर उद्योगों के केन्द्र बन गये हैं।

खिलौने बनाने के केन्द्रों में लखनऊ (उत्तर प्रदेश), कृष्णानगर (पश्चिम बंगाल), पाटन (गुजरात) और कर्नाटक के रामनगरम में चन्नापटना, आंध्र प्रदेश में कोड़ापल्ली लकड़ी के खिलौने बनाने का उद्योग मुख्यतः घरेलू रूप में हैं। परंतु बहुत से स्थानों पर लघु उद्योग के रूप में कारखाने लगे हुए हैं जिनमें लकड़ी के खिलौनों के अतिरिक्त मांटेसरी व किन्डर गार्डन शिक्षा पद्धति में सहायक फलों के मॉडल, बिल्डिंग ब्लॉक पहेलिया, नन्हें-मुन्हें फर्नीचर के नमूने, छोटी कारें व इंजन आदि भी बनाये जाते हैं।

भारत प्रतिवर्ष लाखों रूपये मूल्य के खिलौने निर्यात करता है लकड़ी तथा पेपरमेशी के कलात्मक खिलौनों का सबसे बड़ा

विदेशी ग्राहक संयुक्त राज्य अमेरिका है। अन्य ग्राहक देश हैं- अफगानिस्तान, इंग्लैंड, श्रीलंका, मलेशिया, कुवैत और नाइजीरिया।

लकड़ी के खिलौनों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। एक तो भारत की परम्परागत कला के अनुसार बनाए हुए खिलौने जिनमें देवी- देवता तथा अन्य आकृतियों के खिलौने अत्यंत ही चमकदार रंग-बिरंगे रंगों से पेंट किए होते हैं। इस प्रकार के खिलौने बनाना एक खानदानी पेशा है और नए आदमियों के लिए यह कला है।

लकड़ी के खिलौनों के दूसरे प्रकार के खिलौने आधुनिक डिजाइन के होते हैं जैसे हवाई जहाज, टैंक, मोटर आदि। यह खिलौने बड़ी सरलता से बनाए जा सकते हैं और आजकल इन्हीं की बिक्री ज्यादा है।

नर्सरी और के.जी. स्कूलों में खरीदे जाने वाले वर्ड बिल्डिंग (अक्षर ज्ञान व शब्द सिखाने वाले चौकोर टुकड़े) पहेलियाँ, बिल्डिंग ब्लॉक, गुड़ियों के घर व गुड़ियों केनन्हें-मुन्हें फर्नीचर तथा खेल में शिक्षा देने वाले पचासों प्रकार के खिलौने बनाकर इनको बड़ी-बड़ी दुकानों पर बेचा जा सकता है। लकड़ी के खिलौने तैयार करने के लिए सेमल, आम आदि की लकड़ी की जरूरत पड़ती है।

लकड़ी के बड़े ही सुन्दर मॉडल के हवाई जहाज बनाए जाते हैं। इन्हें बनाने के लिए बालसा नामक एक विशेष प्रकार की लकड़ी प्रयोग की जाती है। यह लकड़ी बड़ी मजबूत और अत्यंत हल्की होती है। भारत में यह लकड़ी बहुत कम मात्रा में मिलती है। अच्छे खिलौने बनाने के लिए कभी-कभी प्लाईबुड का भी प्रयोग किया जाता है। प्लाईबुड लकड़ी के मुकाबले में बहुत ज्यादा मजबूत होता है लेकिन साथ ही काफी मंहगी भी पड़ती है। प्लाईबुड हर शहर में मिल सकती है और भारत में बनाई जाती है। यह पतली, मोटी कई प्रकार की होती है।

लकड़ी के खिलौने बनाने के लिए एक फ्रेटसा मशीन की आवश्यकता पड़ती है। यह मशीन पैरों से चलाई जाती है। काम करने वाला एक कुर्सी या स्टूल पर बैठ जाता है और पैरों से मशीन को चलाता रहता है। अधिक पूँजी होने की दशा में बिजली से चलने वाली जिगसा मशीन खरीदी जा सकती है।

इसके अतिरिक्त लकड़ी को चिकना करने के लिए रन्दे, छोटी-बड़ी हथोड़ियाँ,छेद करने के लिए बरमे, चीजल व अन्य बढ़ईगिरी के औजारों की जरूरत पड़ती है। खिलौनों में पहिए भी लगाए जाते है। पहिए तैयार करना भी एक समस्या है परंतु इसको बहुत कम खर्चे में ही हल किया जा सकता है। किसी खराद वाले बढ़ई से लकड़ी के मोटे डटे खराद पर उतारकर गोल बनवा लिए जाते हैं।

जब जरूरत पड़े तो लकड़ी काटने की आरी से इसमें उचित मोटाई के पहिए काट लिये जाते हैं। जब काम बढ़ जाये तो लकड़ी की खराद मशीन लगाई जा सकती है जिससे खराद के काम के खिलौने व अन्य कलात्मक वस्तुएं तैयार की जा सकती है।

खिलौने बनाने के लिए यह उचित होगा कि खिलौनों का डिजाइन जितना अच्छा होगा वह उतने ही जल्दी और अधिक संख्या में बिक सकेंगे। जिन लोगों के पास काफी मात्रा में खिलौने हैं वे कोलकाता, मुम्बई और दिल्ली कीखिलौने वाली बड़ी-बड़ी दुकानों में अच्छे-अच्छे डिजाइनों के खिलौनो को बेच सकते हैं।

आजकल पढ़े-लिखे व्यक्ति अपने घरों को सजाने एवं अपने ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ाने के लिए खिलौने खरीदते हैं। परंतु यह खिलौने वास्तव में खिलौने नहीं कहलाते बल्कि कलाकृति या आर्ट पीस कहे जाते हैं क्योंकि इनमें कला का अंश अधिक होता है और बच्चों की पसंद से भिन्न होतेहैं जो ऊँचे मूल्य में बिकते हैं।उदाहरण के लिए कोई बच्चा वीनस के स्टेच्यू को पसंद नही करेगा। इसके विपरीत छोटी बिल्ली या हाथी का खिलौना वह तुरंत उठा लेगा।इस प्रकार आजकल के खिलौने दो वर्गों में रखे जा सकते हैं - सस्ते चमकदार रंगों वाले बच्चों के खिलौने और घरों की सजावट के लिए कलात्मक खिलौने।

लोकल खिलौनों के लिए वोकल के इस दौर में जिस तरह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र को संबोधित किया और कहा कि वक्त आ गया है कि भारत के खिलौने भारत में बने और थीम भी

भारतीय हो। उन्होंने खिलौनों की चर्चा करते हुए गुरूदेव रवींद्र नाथ टैगोर की चर्चा की और कहा कि खिलौने ऐसे हों जो बच्चों का बचपन बाहर लाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि खिलौने वो ठीक होते हैं जो अधूरे होते हैं ताकि उसे देखकर उसे पूरा करने की कल्पनाशीलता बाल मन में जगे और इसमें बच्चों में सृजनात्मता का विकास हो।

प्रधानमंत्री ने कहा कि खिलौनों के साथ दो चीजें कर सकते हैं - पहला तो अपने गौरवशाली अतीत को जीवन में फिर से उतार सकते हैं और दूसरा अपने स्वर्णिम भविष्य को भी संवार सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि वे अपने स्टार्ट-अप मित्रों से कहना चाहेंगे कि TEAM UP FOR TOYS। अब सभी के लिए लोकल पर वोकल हो जाइये और इसे ग्लोबल बनाइये। भारत को आत्मनिर्भर बनाने में निश्चित तौर पर हमारी अर्थव्यवस्था पटरी पर आ जाएगी।

संदीप भाले

उप प्रबंधक (सेवानिवृत्त)

भगवान : एक चित्रकार

इक कोरे कागज़ पर वो एक तस्वीर बनाने बैठा,
फिर अपनी कलाकारी पर था वो ऐंठा,
कुछ गलतियों पर उसको दुःख तो था,
पर वो किससे अपनी कहानी कहता?

बारी आई रंग चढ़ाने की,
तो कुछ जाने-पहचाने से रंग लिए उसने,
अपने नाज़ुक हाथों से ब्रश फेरता,
थोड़े और रंग, संग लिए उसने।

एक रंग सबसे ज़्यादा था फिरा,
पर वो चित्रकार उसे मिटा भी ना पाया मिटाने से,
खैर! वो दिखना भी ज़रूरी था,
वो रंग छिपता नहीं, ना दिखाने से।

उस चित्रकार को वो रंग ज़्यादा प्यारा ना था,
पर उसी रंग ने उसे बनाया था धनवान,
वो 'गरीबी' का रंग था,
और वो चित्रकार था ख़ुद भगवान।

तस्वीर बनके तैयार हुई,
उसको फिर अपने रंग चुनने पर थोड़ा दुःख हुआ था,
आबादी बढ़ाता, गरीबी फैलाता,
एक और गरीब पैदा हुआ था।

.....

गलतफहमी और समझ

रिश्ते कभी भी कुदरती मौत नहीं मरते,
इनको हमेशा इंसान ही क़त्ल करता है...
कभी नफरत से, कभी नज़रअन्दाज़ी से
तो कभी ग़लतफ़हमी से !

यह शिकायत आपको तकरीबन हर कहीं सुनने को मिल जाएगी, 'हमें कोई समझता ही नहीं।' क्या किसी को समझना सचमुच इतना कठिन है, जबकि हम मानते हैं कि हमारे परिवार, हमारे रिश्ते, हमारे नाते, सब आपसी समझ पर ही टिके होते हैं? यह भी सच है कि दूसरों को समझना एक ऐसा कौशल है, जो हर एक के पास नहीं होता। वैसे समझना दोतरफा प्रक्रिया है, लेकिन हमारी आदत एकतरफा प्रक्रिया की होती है। अक्सर हम वही बात समझते हैं, जिसे सुनना पसंद करते हैं। यानी आपसी समझ की कमी का मूल कारण यदि कुछ है, तो वह स्वयं हमारा पूर्वाग्रही और पक्षपाती स्वभाव है। फिर हमारा सोचने का ढंग भी है, जो हमें दूसरों के दृष्टिकोण को सही तरीके से समझने से रोकता है और संबंधों में टकराव पैदा करता है। रिश्ते में एक छोटी सी गलतफहमी रिश्ते को खत्म कर सकती है, ऐसे में बेहतर है कि बात बढ़ने से पहले ही गलतफहमी को दूर कर लिया जाए। आमतौर पर गलतफहमी, एक दूसरे की बातों और भावनाओं को न समझ पाने की स्थिति से रिश्ते में कड़वाहट आ जाती है। इसलिए रिश्ते में गलतफहमियों को बड़ा बनने से पहले ही दूर कर लिया जाए। गलतफहमी यानि एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति की बातों और फीलिंग्स को न समझ पाना, जिसकी वजह से छोटी सी बात बहस और लड़ाई का रूप ले लेती है। इसके साथ ही कई बार रिश्तों में हमेशा कड़वाहट आने लगती है। गलतफहमी के चलते ही हम कई बार सच्चे मित्र या हितैषी को खो देते हैं। लोग हमारे दिल की बातों या इरादों को जान नहीं सकते, इस वजह से देर-सबेर कोई-न-कोई तो हमारी कथनी या करनी का गलत मतलब निकालेगा ही। इसी वजह से कई बार गलतफहमियाँ हो जाती हैं। कभी-कभी हम अपनी बातों और विचारों को अच्छी तरह से और साफ-साफ शब्दों में कह नहीं पाते। कभी-कभी आस-पास में हो रही आवाज़ों और दूसरे विकर्षणों की वजह से शायद सामनेवाला व्यक्ति हमारी बातें ठीक तरह से सुन न पाए जिसकी वजह से भी गलतफहमी हो जाती है।

कुछ लोग अपने स्वभाव और तौर- तरीकों की वजह से गलतफहमी के शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर कोई व्यक्ति शर्मीला हो, तो उसके बारे में यह गलत राय कायम की जा सकती है कि वह ठंडे किस्म का, सबसे अलग रहने वाला या घमंडी इंसान है। इसके अलावा, ज़िंदगी में पहले हुए अनुभवों की वजह से भी लोग उसी तरह के हालात का फिर से सामना करने पर हद-से-ज़्यादा प्रतिक्रिया दिखाते हैं, इससे भी गलतफहमी पैदा हो सकती है। अलग-अलग संस्कृतियों और भाषाओं की वजह से भी कभी-कभी लोग, किसी बात का कुछ और ही मतलब निकाल सकते हैं। इतना ही नहीं, गपशप और मिर्च-मसाला लगाकर कही गयी बातों की वजह से भी गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं। इसलिए उस समय हमें ताज्जुब नहीं होना चाहिए जब शुरू में कही गयी बात या किए गए काम का कुछ और मतलब निकालकर हमें बताया जाता है। दूसरे लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं, यह खासकर इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस हद तक आपके

इरादों को समझ पाए हैं। अतः, जब लोग आपके नेक इरादों का गलत मतलब निकालते हैं तो वाजिब है कि इससे आपको बुरा लगता है। आप शायद बहुत नाराज़ हो जाएँ और सोचें कि आखिर क्यों किसी को आपकी बात का गलत मतलब निकालना चाहिए। आपकी नज़रों में ऐसा सिर्फ आपका अपमान करने के इरादे से किया गया है, आपको उनकी राय बिलकुल एक-तरफा, यहाँ तक कि पूरी तरह से गलत लगती है और इससे दिल को ठेस पहुँच सकती है, खासकर अगर आप दूसरों की अनुचित राय को बहुत ज़्यादा अहमियत देते हैं। असल में ऐसी किसी भी गलतफहमी को एक-दूसरे से आपस में खुलकर बात करके दूर कर लेना चाहिए। किसी भी विषय को लेकर हमें अगर किसी से, किसी भी तरह की गलतफहमी हो गई हो तो उसे जल्द से जल्द दूर कर लेना चाहिए, क्योंकि गलतफहमी भी एक धीमा जहर है, जिससे इंसान मन ही मन घुटता रहता है और तनाव में आ जाता है। यह तनाव इंसान को भीतर ही भीतर खोखला करता रहता है। हमें चाहिए कि हम अपनी गलतफहमी दूर कर लें और मन को रखें प्रफुल्लित और खुश।

गलतफहमी और समझ के बीच में एक बहुत ही पतली रेखा होती है, जिसको भांपने की जरूरत होती है। नासमझी से ज्यादा यह गलतफहमी हानिकारक होती है। एक छोटी-सी गलतफहमी बरसों के बने हुए रिश्तों को कुछ ही क्षण में तबाह कर देती है। गलतफहमी हमारे जीवन में आने वाली अनगिनत समस्याओं की श्रृंखला का एक संकेत है, जिसे समय पर समझना अति आवश्यक है। अत: एक बेहतर दुनिया में बेहतर जीवन जीने के लिए यह अनिवार्य है कि हम बेहतर समझ को धारण करें, ऐसी समझ को, जो हमें गलतफहमियों से बचाए। इसके लिए सबसे पहले हमें सभी से सौहार्दपूर्ण, प्रिय, सुलभ और सरल होना पड़ेगा, ताकि उन्हें हमारे साथ व्यवहार करने में न तो कोई भी तरह का संकोच महसूस हो और न ही इसको लेकर उनके मन में कोई शंका रहे। हमारी अंतरात्मा साफ है और अभिव्यक्ति विनम्र और सटीक है, तो फिर किसी भी प्रकार की गलतफहमी के लिए हमारे जीवन में तनिक गुंजाइश भी बाकी नहीं रहेगी। हम बड़ी सहजता से सौहार्दपूर्ण संबंधों को बनाने में कामयाब रहेंगे।

<u>रिश्ते में गलतफहमियां दूर करने के उपाय / तरीके :</u>

1. किसी भी रिश्ते में गलतफहमी दूर करने का सबसे सरल और आसान तरीका है, खुलकर बात करना। याद रखें बातचीत बंद करने से मतभेद और गलतफहमियां खत्म होने की जगह बढ़ती हैं।

2. अगर आपको अपने रिश्ते की गलतफहमी को दूर करना है, तो पहले उसकी बातों को ध्यान से सुनें, इससे आपको गलतफहमी की वजह के बारे में पता चल पाएगा । जिससे आप उपयुक्त हल निकाल पायेंगे।

3. वैसे तो रिश्ते की गलतफहमियों को अपने स्तर पर सुलझाने की कोशिश करें। अगर फिर भी हल न मिले, तो घर के किसी भरोसेमंद बड़े सदस्य या दोस्त से सलाह लें।

4. अगर आप एक-दूसरे के साथ हमेशा रहना चाहतें हैं तो, ऐसे में साथी की छोटी-छोटी गलतियों को नजरअंदाज करें।

5. रिश्ते में गलतफहमी को दूर करने के लिए और रिश्ते को बेहतर बनाने के लिए अनजाने में हुई गलती की समय रहते माफी मांग लें।

हीरा लाल
सहायक प्रबन्धक

लक्ष्मी मां तुम्हारे चरण पूजत सब संसार
रिद्धि-सिद्धि देकर हमें कर दो कृपा अपार॥

भावार्थ : माता लक्ष्मी पूरा संसार आपकी पूजा करता रहता है। हम भी आपका भजन करते हैं और आपका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं। हे माता कृपा करके हमें रिद्धि-सिद्धि प्राप्त करने का आशीर्वाद दें ।

मानवाधिकार

मैं एक मानव अधिकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता, संगीत शिक्षक हूँ। मैंने मानव अधिकार में स्नातकोत्तर करने के दौरान अपनी थीसिस लिखने और शोध के वक्त लोगों से साक्षात्कार, बात- चीत और अनुभवों से रुबरु हुआ और जो व्यक्तिगत अनुभव किये उनका कुछ सार निम्नलिखित है जो कानूनी और संवैधानिक रूप से स्वीकार नहीं माना जाता है लेकिन व्यावहारिक रूप से शायद आप सभी की सहमति जरूर होगी।

मानव के बुनियादी अधिकार किसी भी जाति, धर्म, लिंग, समुदाय, भाषा, समाज आदि से इतर होते हैं। रही बात मौलिक अधिकारों की तो ये देश के संविधान में उल्लिखित अधिकार हैं। ये अधिकार देश के नागरिकों को और किन्हीं परिस्थितियों में देश में निवास कर रहे सभी लोगों को प्राप्त होते हैं। यहाँ पर एक बात और स्पष्ट कर देना उचित है कि मौलिक अधिकार के कुछ तत्व मानवाधिकार के अंतर्गत भी आते हैं जैसे- जीवन और वैयक्तिक स्वतंत्रता का अधिकार। वर्तमान समय में देश में जिस तरह का माहौल आए दिन देखने को मिलता है ऐसे में मानवाधिकार और इससे जुड़े आयामों पर चर्चा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। देश भर में मॉबलिंचिंग की घटनाएँ, बिहार के मुजफ्फरपुर और उसके तुरंत बाद उत्तर प्रदेश के देवरिया में शेल्टर होम की बच्चियों के साथ हुए वीभत्सकृत्य देश में मानवाधिकारों की धज्जियाँ उड़ाते दिखते हैं।

यह बातें कड़वी जरूर है लेकिन वास्तविकता के बहुत करीब हैं। अतः हमें समाज में व्याप्त इन कुरीतियों को दूर करने की दिशा में कार्य करना होगा और हमें जागरूक होना होगा तथा दूसरों को भी जागरूक करना होगा। हमारे संविधान में भ्रष्टाचार को मिटाने और उससे निपटने के बहुत से अधिकार दिए गए हैं लेकिन हम उनका उपयोग नहीं करते हैं और दूसरों से उम्मीद करते हैं कि कोई और पहल करे। हमें अपनी इस प्रवृति को बदलने की आवयश्कता है। मैंने इसी प्रवृति को जागरूक करने के लिए मानव अधिकार में स्नातकोत्तर करने का निर्णय लिया और सर्विस करने के साथ-साथ मानव अधिकार विषय में पढ़ाई की, ताकि मैं मानव अधिकारों को अच्छी तरह समझ सकूँ । भारत में, मानवाधिकारों की रक्षा के कई तरीके हैं। संसद और कार्यपालिका को देश में कानून का निर्माण और कार्यान्वयन सौंपा गया है जब कि न्याय पालिका इसके निष्पादन को सुरक्षित करती है। इन बुनियादी चीजों के अलावा संस्थानों के अन्य निकाय हैं जो मौजूदा तंत्र को मजबूत और समृद्ध बनाते हैं। वास्तव में समर्पित सरकारी एजेंसियां, सामाजिक रूप से समर्पित गैर-सरकारी संगठन, स्थानीय सामुदायिक समूह और कुछ स्वयंसेवी बुद्धिजीवी लोग इन कुरीतियों के चलन को मिटने के लिए प्रतिबद्ध और कार्यरत हैं परन्तु फिर भी मैंने अनेक बार समाज, पुलिस, न्याय-व्यवस्था का क्रूरतम रूप देखा है । फिल्मों में जो दिखाया जाता है उससे कहीं बढ़कर वास्तविक जीवन में होता है।

1. हमारी पुलिस व्यवस्था आज भी अंग्रेजों के ज़माने की है । अगर आप पैसे खर्च नहीं कर सकते तो न्याय की उम्मीद भी मत रखिये ।

2. सबूत गवाह बनाये और मिटाये जा सकते हैं बस पैसे खर्च करने हैं ।

3. पुलिस आपकी हर मदद करेगी । उनके मुंह से शहद बरसेगा अगर आप उन्हें पैसे देते हैं या आप कोई बड़े संपर्क वाले हैं तो ।

4. शारीरिक मानसिक चोट पहुँचाना बहुत मामूली बात है। हाँ, कोई निशान आपके शरीर पर नहीं रहने देंगे। आप को सोने नहीं दिया जायेगा ।

5. आप लॉकअप में आत्महत्या नहीं कर सकते क्योंकी रात में आप के पूरे कपडे उतरवा लिए जायेंगे ।

6. सीसीटीवी आपकी कोई मदद नहीं करेगा क्यूंकि ये आपको घेर के खड़े हो जायेंगे। उन्हें वो कोना भी पता होता है जहाँ सीसीटीवी की पहुँच नहीं होती।

7. पुलिस में सभी ऊपर से नीचे तक मिले होते हैं ।

8. ये आप से सहानुभूति का अच्छा नाटक खेलेंगे सिर्फ आपको और गहरे तक फंसाने के लिए जितने आप फंसोगे उतने ज्यादा पैसे निकलेंगे ।

9.मानव अधिकार संगठन (Human Rights Commission) जैसी चीजें आपकी कोई मदद नहीं करेंगी उनका उत्तर आपको 8-10 महीने बाद मिलेगा ।

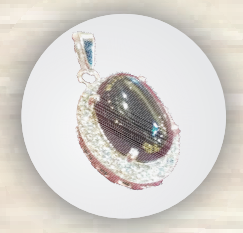

10. मीडिया रिपोर्टर कोई आपकी सहायता नहीं करेगा । वे सिर्फ उनकी सहायता करते हैं जो उन्हें विज्ञापन देता है ।

11. कोई नेता या पार्टी आपकी हेल्प नहीं करेगी अगर आप उनका वोट बैंक नहीं हैं या आप उन्हें चंदा नहीं देते हैं।

12. आपने शिकायत की है तो भी आप ही अपराधी हैं ।

13. आप की मदद सिर्फ आप ही कर सकते हैं केवल आपको मानसिक रूप से शक्तिशाली होना होगा और व्यवस्था की बारीकियां पता होनी चाहिए । मेरा मकसद किसी व्यक्ति विशेष या कार्य प्रणाली को चुनौती देना नहीं है बल्कि आपत्ति और वास्तविकता को इंगित करना है । आइये, हम सब साथ मिलकर इन कुरीतियों, चलनों को समाज से मिटाने का प्रयास करें ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी इन से मुक्त रहे और एक अच्छे समाज में रहने का सुख प्राप्त कर सके ।

हीरा लाल

सहायक प्रबन्धक

वक्र तुंड महाकाय, सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव शुभ कार्येषु सर्वदा ॥

भावार्थ : हे हाथी के जैसे विशालकाय जिसका तेज सूर्य की सहस्त्र किरणों के समान हैं । बिना विघ्न के मेरा कार्य पूर्ण हो और सदा ही मेरे लिए शुभ हो ऐसी कामना करते हैं ।

"कुदरत का खेल"

कुदरत का है खेल यहाँ,
रोना गाना सब चलता है।
दुनिया की है रेल यहाँ,
आना जाना ही रहता है।
कुछ आए थे और चले गए,
कुछ आए हैं अब जायेंगे।
कुछ कलियाँ खिलने वाली हैं,
कुछ फूल आज मुर्झाएंगे।
कुछ ओठों पर मुस्कान खिली,
कुछ आँखों में आँसू आए।
कुछ आगे बढ़ते चले गए,
कुछ अपनी जगह लौट आए।
कुछ अपने लिए जिए केवल,
औरों के काम नहीं आए।
दुनिया का दर्द देख कुछ के,
आँखों में अश्क छलक आए।
जाना तो हम सबको ही है,
पर कुछ ऐसा कर जाना है।
जो हमको भूल चुके अब तक,
उनको खुशियाँ दे जाना है।

अमृत लाल शर्मा

वरिष्ठ सहायक

हिन्दी पखवाड़ा, 2021 के पुरस्कार वितरण के अविस्मरणीय पल

हार्दिक बधाई

हिंदी पखवाड़ा - 2021

मुख्यालय 'क' क्षेत्र नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़ा-2021 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता:

1.निबंध प्रतियोगिता

1. श्रीमती बबीता देशवाल,सहायक प्रबंधक,कर्म. सं. 1027	प्रथम
2. श्री मनोज कुमार, उप प्रबंधक,कर्म. सं.0833	द्वितीय
3.श्री अमित अरोड़ा, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं.1153	तृतीय

2.टिप्पण-प्रारूपण एवं राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता

1.श्री मनोज कुमार, उप प्रबंधक, कर्म. सं. 0833	प्रथम
2.श्री गिरीश तिवारी, उप प्रबंधक, कर्म. सं. 0925	द्वितीय
3.श्रीमती बबीता देशवाल, सहायक प्रबंधक, 1027	तृतीय

3. सूक्ति प्रतियोगिता

1.श्रीमती दीप्ति बजाज, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं. 1151	प्रथम
2.श्री हीरा लाल, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं. 1035	द्वितीय
3.श्रीमती नीरजा शर्मा, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं.1170	तृतीय

4..कविता पाठ प्रतियोगिता

1.श्री मनोज कुमार, उप प्रबंधक, कर्म. सं. 0833	प्रथम
2.श्रीमती दीप्ति बजाज, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं. 1151	द्वितीय
3. श्रीमती मीतू वजीरानी, उप प्रबंधक, कर्म. सं. 0950	द्वितीय
4.श्री अमित अरोड़ा, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं. 1153	तृतीय
5.श्री मोहन सिंह, शॉप सहायक, कर्म. सं.1153	तृतीय

5. वाद-विवाद प्रतियोगिता

1. श्री मनोज कुमार, उप प्रबंधक, कर्म. सं. 0833	प्रथम
2. श्रीमती मीतू वजीरानी, उप प्रबंधक, कर्म. सं. 950	द्वितीय
3.श्रीमती दीप्ति बजाज, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं. 1151	तृतीय
4. श्री सूरज पुरी, सहायक प्रबंधक, कर्म. सं.0777	तृतीय

प्रथम पुरस्कार रू० 2,800/-, द्वितीय पुरस्कार रू० 2,000/- तृतीय पुरस्कार रू० 1,600/- का है। प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले अन्य सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन के रूप में प्रतिभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

हार्दिक बधाई
हिंदी पखवाड़ा - 2021

कॉरपोरेशन में सितम्बर, 2021 में हिंदी पखवाड़ा के दौरान "ग " क्षेत्र अर्थात बेंगलुरु, चैन्नई, कोलकाता एवं सिकंदराबाद शाखा में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता :

हिंदी निबंध प्रतियोगिता

1.श्रीमती लक्ष्मी सुधीर (सहायक प्रबंधक, बेंगलुरू) कर्म. सं. 1133	प्रथम
2.सुश्री के.एल. सुनीता (सहायक प्रबंधक, चैन्नई) कर्म. सं. 1088	द्वितीय
3.श्री रजत कुमार श्रीवास्तव (कैशियर/लेखा सहा., कोलकाता) कर्म. सं.1251	तृतीय

टिप्पण-प्रारूपण एवं राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता

1.श्री रजत कुमार श्रीवास्तव (कैशियर/लेखा सहा., कोलकाता) कर्म. सं.1251	प्रथम
2.श्रीमती तनुश्री मल्लिक (बिक्री सहायक, कोलकाता) कर्म. सं. 1254	द्वितीय
3.श्री अनिल रजक, (प्रबंधक, कोलकाता) कर्म. सं. 1267	तृतीय

सूक्ति प्रतियोगिता

1. श्रीमती तनुश्री मल्लिक (बिक्री सहायक, कोलकाता) कर्म. सं. 1254	प्रथम
2.सुश्री आर. सुधा (सहायक प्रबंधक, चैन्नई) कर्म. सं. 1096	द्वितीय
3.श्री सी. मुरली (सहायक प्रबंधक, चैन्नई) कर्म. सं. 1084	तृतीय

वाद-विवाद प्रतियोगिता

1. श्री रजत कुमार श्रीवास्तव (कैशियर/लेखा सहा., कोलकाता) कर्म. सं.1251	प्रथम
2.श्रीमती तनुश्री मल्लिक (बिक्री सहायक, कोलकाता) कर्म. सं. 1254	द्वितीय
3. श्री ब्रजेश झा ललन (उप-प्रबंधक, कोलकाता) कर्म. सं.1264	तृतीय

प्रथम पुरस्कार रू० 2,800/-, द्वितीय पुरस्कार रू० 2,000/- तृतीय पुरस्कार रू० 1,600/- का है ।प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले अन्य सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन के रूप में प्रतिभागिता प्रमाणपत्र प्रदान किया गया ।

स्वास्तिक

स्वास्तिक अत्यन्त प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में मंगल प्रतीक माना जाता है । स्वास्तिक शब्द सु + अस + क से बना है। 'सु' का अर्थ अच्छा, 'अस' का अर्थ 'सत्ता' या 'अस्तित्व' और 'क' का अर्थ 'कर्त्ता' या करने वाले से है । अत : स्वास्तिक शब्द का अर्थ अच्छा या मंगल करने वाला। इसकी आकृति का संकेत – मानव को प्रगति की ओर बढ़ने का संकेत देता है। स्वास्तिक को ऋगवेद की ऋचा में सूर्य का प्रतीक माना गया है।

स्वास्तिक को ग्रंथों में चार युग, चार वर्ण, चार आश्रम एवं धर्म का प्रतीक माना गया है।

लाल रंग से ही स्वास्तिक क्यों बनाया जाता है ?

लाल रंग व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्तर को जल्दी प्रभावित करता है। यह रंग शक्ति का प्रतीक माना जाता है| सौर मंडल में मौजूद ग्रहों में से मंगल ग्रह का रंग भी लाल है। यह एक ऐसा ग्रह है जिसे साहस, पराक्रम, बल व शक्ति के लिए जाना जाता है। यही वजह है कि स्वास्तिक बनाते समय सिर्फ़ लाल रंग का ही प्रयोग करने की सलाह दी जाती है।

स्वास्तिक का प्रयोग क्यों करते हैं ?

क) स्वास्तिक को कार्य की शुरुआत और मंगल कार्य में रखते हैं क्योंकि यह भगवान गणेश का रूप माना जाता है।

ख) इसका प्रयोग करने से व्यक्ति को संपन्नता, समृद्धि और एकाग्रता की प्राप्ति होती है।

ग) सही तरीके से स्वास्तिक बनाया जाए तो उसमें से ढेर सारी सकारात्मक ऊर्जा निकलती है। यह ऊर्जा वस्तु या व्यक्ति की रक्षा, सुरक्षा करने में मददगार होती है।

स्वास्तिक से जुड़े आश्चर्यजनक तथ्य :

क) शोधकर्ताओं के अनुसार स्वास्तिक का चिह्नआर्य युग और सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है।

ख) स्वास्तिक अपनी शुभता की वजह से पहचाना जाता है। हिटलर ने इसे अपने आर्य वर्चस्व सिद्धांत के लिए चुना था।

ग) माना जाता है कि स्वास्तिक 11,000 वर्षों से भी पुराना है।

स्वास्तिक मंत्र

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृदधश्रवाः ।

स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥

स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः।

स्वस्ति नोब्रिहस्पतिर्दधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

....

श्रीमती रीना यादव
धर्मपत्नी श्री नवीन कुमार यादव,
अपर महा प्रबंधक

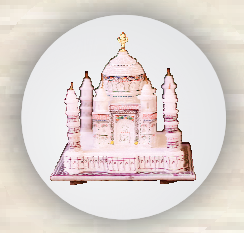

मेरा लेख

एक नजर प्यार से उठा कर तो देखो।
नफरतों को दिल से मिटा कर तो देखो।
कौन कहता है ? इंसानियत जुदा हो गई है ।
शरीफों की शराफत बेबफा हो गई है ।
एक नजर प्यार से उठा कर तो देखो ।

लक्ष्य बनाना है तो अमीरी का मत बनाओ
खुद से पहले दूसरों के ख्वाबों को सजाओ ।
एक नजर प्यार से उठा कर तो देखो
दौलत से सुख की कोई पहचान नहीं है ।
प्रेम से ज्यादा मूल्यवान कोई नहीं है ।
यकीन नहीं आता तो
उन पागल दौलत वालों को देखो।
एक नजर प्यार से उठा कर तो देखो।

बदलना है तो आज ही बदल कर देखो,
कल कभी आता ही नहीं,
यह अच्छी तरह समझ लो,
जिन्होंने कल पर छोड़ा है उनकी हालत तो देखो,
एक नजर प्यार से उठा कर तो देखो ।
पंख में अगर जान है तो आसमान तुमसे दूर नहीं,
श्रृद्धा में अगर जान है तो भगवान तुम से दूर नहीं।

श्रीमती बिमला बिष्ट
धर्मपत्नी श्री मोहन सिंह बिष्ट, शॉप सहायक

चाँद पर जीवन क्यों नहीं है?

अब जब मानव चाँद पर पहुंच चुका है और उसके बारे में काफी नई चीजें जान चुका है, लेकिन त यह है कि चाँद पर जाने से पहले भी मनुष्य यह जानता था कि चाँद पर कोई जीवन नहीं है। खगोलशास्त्री इस बात को इसलिए जानते थे क्योंकि चाँद पर धुंधलका या ट्वाईलाईट नहीं होती। पृथ्वी पर अंधेरा धीरे-धीरे आता है क्योंकि हवा सूरज के डूबने के बाद भी सूरज की रोशनी को रिफ्लेक्ट करती है। चाँद पर एक पल धूप होती है और अगले ही पल रात आ जाती है ।

अभी चन्द्रयान 2 को लेकर चाँद के बारे में काफी चर्चा हुई और चाँद पर मानव कॉलोनी बनाने की भी काफी योजनाएं हैं , लेकिन अगर ऐसा होता है तो उन प्राणियों या जीवों का क्या होगा जो चांद पर हैं?

हवा के न होने का क्या अर्थ है?

चाँद सूरज की किरणों से सुरक्षित नहीं है। सूरज हीट व लाइट रेडिएशन भेजता है। पृथ्वी पर जीवन हीट व लाइट पर निर्भर करता है। लेकिन सूरज खतरनाक प्रकार के रेडिएशन भी भेजता है, जिनमें से अधिकतर से पृथ्वी का वातावरण हमारी सुरक्षा करता है। लेकिन चाँद पर रेडिएशन को रोकने के लिए वातावरण नहीं है, सूरज की सारी किरणें चाँद की सतह पर आ जाती हैं। वातावरण के न होने से चाँद की सतह या तो बहुत अधिक ठंडी होती है या बहुत अधिक गर्म। चाँद के घूमने की वजह से जिस साइड पर सूरज पड़ता है वह बहुत गर्म हो जाती है, तापमान 150 डिग्री सेंटीग्रेड से भी अधिक हो जाता है। यह तो खोलते पानी से भी अधिक है।

चाँद का गर्म दिन दो सप्ताह तक रहता है। फिर दो सप्ताह की रात होती है, जिसमें तापमान शून्य से 125 डिग्री सेंटीग्रेड कम हो जाता है। यह पृथ्वी के दक्षिण ध्रुव से भी दोगुनी ठंड है। ऐसी स्थिति में जिस जीवन को हम पृथ्वी पर जानते हैं, वह चाँद पर हो ही नहीं सकता।

.....

केले के अचूक उपाय

केला एक अद्भुत फल है। यह औषधीय फल है जो कच्चा भी खा सकते हैं और पका हुआ भी। पका हुआ केला बृहस्पति ग्रह से संबंध रखता है और कच्चा केला बुध से। केले की मिठास मंगल से और रंग बृहस्पति से संबंध रखता है। केला जितना घुलता जाएगा उतना ही मंगल के नजदीक होता जाएगा।

केले का चमत्कारी प्रयोग

अगर मानसिक तनाव या अवसाद रहता हो तो नियमित रूप से नाश्ते में दो केले खायें। अगर बृहस्पति के कारण संतान नहीं हो पा रही हो तो बृहस्पति को केले का दान करें। अगर बुध को मजबूत करना हो और बुद्धि बढ़ानी हो तो हरे केले की सब्जी खाएं। अगर मोटा तगड़ा बनना हो तो केला खाकर गुनगुना दूध पीएं। अगर बृहस्पति के कारण पेट कमजोर रहता हो तो उस तरह का केला खाएं जो लगभग गल चुका हो।

क्या है केले के पौधे का महत्व

शास्त्रों में तुलसी के बाद केले के पौधे को अत्यंत शुभ माना गया है। इसका संबंध बृहस्पति ग्रह से जोड़ा जाता है। देव कार्यों में या देवताओं के लिए केले के पत्ते पर ही भोजन का प्रावधान है। केले की जड़ को पीले धागे में बांधकर धारण करने से बृहस्पति मजबूत होता है।

केले का पौधा लगाने का क्या है लाभ

केले का पौधा घर में लगाने से बृहस्पति संबंधी तमाम समस्याएं दुर होती हैं। घर में संतान पक्ष हमेशा सुखी रहता है। दाम्पत्य जीवन की कठिनाइयां नहीं आती हैं। भयंकर रागों से रक्षा होती है।

.....

कॉटेज

फेंगशुई गाय को घर में रख कर प्राप्त करें सफलता

गाय बेहद शांत और सौम्य पशु है। हिन्दू धर्म में यह पवित्र और पूजनीय मानी गई है। यहां तक कि ज्योतिष के कई बड़े शास्त्रों में गाय की विशेष महिमा बताई गई है। चीनी विद्या फेंगशुई में यूं तो अनेक गैजेट प्रचलित हैं लेकिन गाय को विशिष्ट महत्व प्राप्त है। फेंगशुई का भी मानना है कि गाय कामधेनु यानी कामना पूर्ति करने वाली और मानसिक शांति प्रदाता है। ऐसा माना जाता है कि अपने बछड़े को दूध पिला रही गाय के प्रतीक रूप को घर में स्थापित करने से न सिर्फ योग्य संतान की प्राप्ति होती है बल्कि ऐसी संतान को कभी धन का अभाव नहीं होता। फेंगशुई में गाय के महत्व को लगभग उसी प्रकार स्वीकारा गया है, जिस प्रकार हिंदू धर्म, संस्कृति में। हिंदू मान्यता के अनुसार गाय में 33 कोटि देवी-देवताओं का वास माना जाता है ।

पितृदोष से मुक्ति –

सूर्य, चंद्र, मंगल या शुक्र की युति राहु से हो तो पितृदोष होता है। यह भी मान्यता है कि सूर्य का संबंध पिता से एवं मंगल का संबंध रक्त से होने के कारण सूर्य यदि शनि, राहु या केतु के साथ स्थित हो या दृष्टि संबंध हो तथा मंगल की युति राहु या केतु से हो तो पितृदोष होता है । इस दोष से जीवन संघर्षमय बन जाता है। यदि पितृदोष हो तो गाय को प्रतिदिन या अमावस्या को रोटी, गुड़, चारा आदि खिलाने से पितृदोष समाप्त हो जाता है।

मान्यताओं के अनुसार देशी गाय की पीठ पर जो कूबड़ होता है, वह बृहस्पति है । अतः जन्म पत्रिका में यदि बृहस्पति अपनी नीच राशि मकर में हों या अशुभ स्थिति में हों तो देशी गाय के इस बृहस्पति भाग एवं शिवलिंगरूपी कुकुद् के दर्शन करने चाहिए । गुड़ तथा चने की दाल रखकर गाय को रोटी भी दें । गोमाता के नेत्रों में प्रकाश स्वरूप भगवान सूर्य तथा ज्योत्सना के अधिष्ठाता चन्द्रदेव का निवास होता है ।

संतान प्राप्ति के लिए रखें बछड़े को स्तनपान करा रही गाय –

बाजार में यह गैजेट कई रूपों में मिलता है। इन्हीं में से एक रूप है अपने बछड़े को स्तनपान करा रही गाय का। फेंगशुई का मानना है कि इस प्रतीक रूप को घर में स्थापित करने से निःसंतानता व इनफर्टिलिटी जैसी समस्याओं से मुक्ति मिलती है और स्वस्थ व गुणवान संतान की प्राप्ति होती है। मुद्रा यानी सिक्कों के ढेर पर बैठी हुई गाय का प्रतीक रूप फेंगशुई में खासा लोकप्रिय है। ऐसा प्रतीक रूप घर या दफ्तर कहीं भी स्थापित किया जा सकता है, जो कि परिवार व संस्थान के लिए सौभाग्य व समृद्धि आमंत्रित करता है।

मानसिक शांति में भी करती है मदद –

आज का मनुष्य अति महत्वाकांक्षी है जिनके पूरा न होने पर वह अशांत और व्याकुल हो उठता है। एसे व्यक्तियों को मानसिक शांति के लिए गाय का स्टैचू घर में स्थापित करना चाहिए। यह गैजेट न सिर्फ मानसिक शांति प्रदान करता है, बल्कि हमारी उचित इच्छाओं को पूरी करने में मददगार भी होता है। साथ ही कठिन दौर व मुश्किलों से जूझने की शक्ति भी प्रदान करता है। इसे घर में दक्षिण-पूर्व में स्थापित करना चाहिए। इसे तस्वीर के रूप में भी दीवार पर लगाया जा सकता है।

करियर में सफलता के लिए ऑफिस टेबल पर रखें फेंगशुई गाय

अगर आपको लगता है कि आपकी मेहनत का उचित फल नहीं मिल रहा है तो फेंगशुई गाय को अपने ऑफिस टेबल पर स्थापित करें। यह आपको मेहनत का उचित प्रतिफल दिलाने में सहायक होगी। इन्हीं खूबियों की वजह से इसे उपहार में भी लिया-दिया जा सकता है। पढ़ाई में एकाग्रता व परीक्षा में सफलता पाने के लिए इसे विद्यार्थियों की स्टडी टेबल पर रखना चाहिए।

(पंजाब केसरी से साभार)

सूर्य के शुभ-अशुभ असर

ज्योतिष गणना के अनुसार सभी ग्रह एक निश्चित अवधि के अंतराल में एक राशि से दूसरी राशि में परिवर्तन करते हैं। सूर्य हर महीने एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि में प्रवेश करता है। सूर्य के राशि परिवर्तन को संक्रांति कहते हैं।

सूर्य का शुभ-अशुभ असर

जब किसी की कुंडली में सूर्य का शुभ प्रभाव होता है तो व्यक्ति को नौकरी और व्यापार में तरक्की मिलती है। सूर्य के शुभ होने से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है और मान-सम्मान मिलता है। वहीं अगर कुंडली में सूर्य का अशुभ प्रभाव है तो यह असफलता का कारण बनता है। रूकावटें और परेशानियां बढ़ने लगती हैं। इसके अलावा धन हानि भी होती है।

कुंडली में सूर्य को मजबूत करने के कुछ नियम

शास्त्रों में भी कहा गया है कि हर दिन सूर्य को जल देना चाहिए। सूर्य को प्रत्यक्ष माना जाता है क्योंकि हर दिन इनके दर्शन प्राप्त होते हैं। बहुत से लोग इस नियम का पालन भी करते हैं। लेकिन इसके भी नियम हैं जिन्हें जानकर सूर्य को जल दें तो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका लाभ प्राप्त किया जा सकता है। ज्योतिष में बताया गया है कि जिस किसी की कुंडली में सूर्य कमजोर होता है उसे प्रतिदिन सूर्य को जल चढ़ाना चाहिए।

शास्त्रों में भी कहा गया है कि हर दिन सूर्य को नियमों का पालन करते हुए जल देना चाहिए। अगर आप नियमानुसार सूर्य को जल दें तो इसका लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

कैसे दें सूर्य को जल

सूर्य को जल देने के नियम के बारे में कहा जाता है कि सूर्य को स्नान के बाद तांबे के बर्तन से जल अर्पित करें।

सूर्य देव को जल चढ़ाने का एक समय होता है। सूर्य के उदय होने के एक घंटे के अंदर अर्घ्य देना चाहिए। आप चाहे तो सुबह 8 बजे तक सूर्य को जल दे सकते हैं।

सूर्य को जल देने से पहले जल में चुटकी भर रोली या लाल चंदन मिलाएं और लाल पुष्प के साथ जल दें।

सूर्य को जल देते समय आपका मुख पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए। अगर कभी ऐसा हो कि सूर्य नजर ना आएं तब भी उसी दिशा की ओर मुख करके ही अर्घ्य दें।

सूर्य को जल देते समय लाल वस्त्र पहनें। लाल कपड़ों में अर्घ्य देना अच्छा माना गया है। अर्घ्य देते समय हाथ सिर से ऊपर होने चाहिए। ऐसा करने से सूर्य की सातों किरणें शरीर पर पड़ती हैं। सूर्य देव को जल अर्पित करने से नवग्रह की भी कृपा रहती है।

....

तुलसी का पौधा

तुलसी (पौधा) पूर्व जन्म में एक लड़की थी जिस का नाम वृंदा था। राक्षस कुल में उसका जन्म हुआ था बचपन से ही भगवान विष्णु की भक्त थी। बड़े ही प्रेम से भगवान की सेवा, पूजा किया करती थी। जब वह बड़ी हुई तो उनका विवाह राक्षस कुल में दानव राज जलंधर से हो गया। जलंधर समुन्द्र से उत्पन्न हुआ था।

वृंदा बड़ी ही पतिव्रता स्त्री थी। सदा अपने पति की सेवा किया करती थी।

एक बार देवताओं और दानवों में युद्ध हुआ तब जलंधर युद्ध पर जाने लगे तो वृंदा ने कहा –

स्वामी आप युद्ध पर जा रहे हैं आप जब तक युद्ध में रहेंगे मैं पूजा में बैठ कर आपकी जीत के लिए अनुष्ठान करूंगी और जब तक आप वापस नहीं आ जाते, मैं अपना संकल्प नहीं छोड़ूंगी। जलंधर तो युद्ध में चले गए और वृंदा व्रत का संकल्प लेकर पूजा में बैठ गयी। उनके व्रत के प्रभाव से देवता भी जलंधर को ना जीत सके। सारे देवता जब हारने लगे तो विष्णु जी के पास गए। सबने भगवान से प्रार्थना की तो भगवान कहने लगे कि – वृंदा मेरी परम भक्त है मैं उसके साथ छल नहीं कर सकता।

फिर देवता बोले – भगवान दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं है अब आप ही हमारी मदद कर सकते हैं। भगवान ने जलंधर का ही रूप रखा और वृंदा के महल में पहुँच गए जैसे ही वृंदा ने अपने पति को देखा, वे तुरंत पूजा में से उठ गई और उनके चरणों को छू लिया, जैसे जी उनका संकल्प टूटा, युद्ध में देवताओं ने जलंधर को मार दिया और उसका सिर काट कर अलग कर दिया, उनका सिर वृंदा के महल में गिरा। जब वृंदा ने देखा कि मेरे पति का सिर तो कटा पड़ा है तो फिर ये जो मेरे सामने खड़े हैं ये कौन हैं? उन्होंने पूछा – आप कौन हो जिसका स्पर्श मैंने किया, तब भगवान अपने रूप में आ गए पर वे कुछ ना बोल सके, वृंदा सारी बात समझ गई, उन्होंने भगवान को श्राप दे दिया आप पत्थर के हो जाओ और भगवान तुंरत पत्थर के हो गए।

सभी देवता हाहाकार करने लगे, लक्ष्मी जी रोने लगे और प्रार्थना करने लगे। तब वृंदा जी ने भगवान को वापस वैसा ही कर दिया और अपने पति का सिर लेकर वह सती हो गयी। उनकी राख से एक पौधा निकला तब भगवान विष्णु जी ने कहा – आज से इनका नाम तुलसी है और मेरा एक रूप इस पत्थर के रूप में रहेगा जिसे शालिग्राम के नाम से तुलसी जी के साथ ही पूजा जायेगा और मैं बिना तुलसी जी के भोग स्वीकार नहीं करूंगा। तब से तुलसी जी की पूजा सभी करने लगे और तुलसी जी का विवाह शालिग्राम जी के साथ कार्तिक मास में किया जाता है। देव-उठावनी एकादशी के दिन इसे तुलसी विवाह के रूप में मनाया जाता है।

तुलसी का पौधा दूर करेगा समस्त वास्तुदोष -हिंदू धर्म में तुलसी के पौधे का विशेष महत्व होता है। तुलसी के पौधे को घर में लगाने से शुभ फल की प्राप्ति होती है। तुलसी के पौधे में तमाम गुण होने के बाद भी कई तरह के नकारात्मक ऊर्जा भी पैदा कर सकता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार तुलसी के पौधे को लगाने की गलत दिशा और इसके इस्तेमाल में की गई लापरवाही के चलते हमारे जीवन पर इसका नकारात्मक असर पड़ता है। अगर इन बातों का ध्यान रखेंगे तो आपके ऊपर इसका सकारात्मक असर पड़ेगा।

वास्तुशात्र के अनुसार तुलसी के पौधे के पत्ते को एकादशी, रविवार और मंगलवार को नहीं तोड़ना चाहिए। वास्तुशास्त्र के अनुसार उत्तर-पूर्व दिशा धन के देवता कुबेर की दिशा मानी जाती है इसलिए घर की आर्थिक स्थिति में वृद्धि करने के लिए तुलसी को उत्तर-पूर्व दिशा में लगाना चाहिए। अगर आपके घर में वास्तु शास्त्र संबंधी कोई दोष है यानि कि हमेशा आपके घर में कोई न कोई परेशानी बनी रहती है तो दक्षिण-पूर्व दिशा में तुलसी का पौधा लगाएं।

यदि तुलसी का पौधा सूख जाए तो उसे नदी या पास के कुएं में डाल देना चाहिए। यदि आप ऐसा न कर सकें तो पौधे को गमले की मिट्टी में ही दवा देना चाहिए।

.....

एक पूरी फार्मेसी का नाम है अनार

घर में अनार का वृक्ष होने का मतलब यह है कि आपके घर में एक पूरी फार्मेसी है। इसके फल (दानों) के चाहने वाले इसके फल के छिलके को फेंक देते हैं जो गुणों की खान होता है। फल के छिलके एवं फल (दानों) के अलावा तने का छिलका, पत्तियाँ, फूल एवं जड़ तथा बीज व बीज के तेल का भी इस्तेमाल होता है। देसी चिकित्सा पद्धति में अनार खास महत्व रखता है। ताजे अनार के रस से भूख बढ़ती है, खाना पचता है और रक्त के संघटन में वृद्धि एवं सुधार होता है। लौंग एवं इलायची के मिला देने पर तो क्षुधावर्धन एवं पाचन के इसके गुणों को चार चांद लग जाते हैं। इस तरह से लें या फिर सीधे तरीके से अनार का फल या उसका रस बढ़े हुए पित्त से होने वाले दाह (शरीर में गर्मी महसूस होने) को कम करता है।

मीठा अनार

यदि अनार के दानों को चबाया जाए तो यह त्रिदोषहर, तृप्तिदायक, वीर्यवर्धक, हल्का, कसैला अनु रस (जो बाद में महसूस होता है) ग्राही, स्निग्ध, मेधा-बुद्धिवर्धक और मुख की दुर्गंध को नष्ट करता है।

खट्टा-मीठा अनार

यह अग्नि (भूख) को बढ़ाता है, रूचि पैदा करता है, कुछ-कुछ पित्त को बढ़ाता है परंतु पचने में हल्का होता है।

खट्टा अनार

यह स्वाद में खट्टा होता है, वात-कफ को नष्ट करता है परंतु पित्त को बढ़ाता है। इसलिए पित्त प्रकृति वालों को, पित्तज रोगों में एवं गर्मी के दिनों में खट्टे अनार का भूलकर भी सेवन नहीं करना चाहिए। मीठा अनार दरअसल, मेवे की तरह होता है। वैसे तो इससे होने वाली पुष्टि अत्यल्प होती है तथापि वह उत्तम रक्त पैदा करती है। यानी हीमाग्लोबीन एवं श्वेत रक्तकण को बढ़ाता है। शीत एवं तर होने के नाते यह गर्मियों के दिनों में और गर्म मिजाज वालों को खासकर फायदा देता है। अनार का रस एक प्रकार लघु प ाहार है। एक बार में 25 से 60 मिली तक प्रयोग किया जा सकता है। खट्टा अनार दूसरे दर्जे में शीत एवं रूक्ष होता है। यह भूख लगाता है, रक्त एवं पित्त के प्रकोप का शमन करता है। यह यकृत एवं हृदय को बल देता है और ग्राही होता है। इसके शर्बत का उपयोग दस्तों को बंद करने तथा अमाशय की उष्णता को कम करने हेतु किया जाता है जबकि खट्टा- मीठा अनार समप्रकृति के समीप शीत एवं तर होता है। यह पित्त प्रकृति वालों के लिए गुणकारी है।

अनार का छिलका

यह शीत तथा रूक्ष होता है। इसका उपयोग रूक्षण, ग्राही, उष्ण कंठ के शोथ को कम करने वाला तथा रक्तस्तम्भन करता है। दांत हिलने एवं मुख में छाले होने पर इसका गंडूण, मंजन एवं अवचूर्णन की भांति प्रयोग करते हैं। यदि किसी स्त्री को अधिक रक्तस्राव हो रहा हो या किसी को खूनी बवासीर हो तो छिलके के काढ़े से उसे कटिस्नान करवाने पर लाभ होता है।

मूल त्वक

इसके गुण एवं प्रकृति वृक्ष (तने) की छाल जैसे ही होते हैं परंतु यह अधिक वीर्यवान होती है। यह भी शीत प्रकृति वालों को हानिकर होती है। इसकी मात्रा 5 से 7 ग्राम हितकर होती है।

अनारदाना

यह पहले दर्जे में शीत एवं रूक्ष होता है। यह दीपन, पाचन, ग्राही, रोचक, क्षुधाजनक, पित्त शमनकारी होता है। अनारदानों को चटनी में डालकर प्रयोग करते हैं। यह भी पित्त प्रकृति वालों हेतु अहितकर होता है। इस हेतु जीरे का प्रयोग करते हैं। यदि खट्टे अनारदाने के साथ बराबर मात्रा में मुनक्का तथा काला जीरा पीसकर चटनी बनाकर खायें तो वह विशेषतः दीपन-पाचन होता है। अनारदाने को पुदीने की चटनी में डालते हैं।

.....

सेवानिवृत्ति/त्यागपत्र/स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति/अनिवार्य सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति के अवसर पर कॉटेज परिवार अपने निम्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है ।

(पहली जनवरी, 2021से जून , 2022 के दौरान)

क्रम सं.	कर्मचारी का नाम एवं पदनाम	नियुक्ति की तारीख	सेवानिवृत्ति की तारीख	सेवाकाल	मुख्य विभाग
1.	श्री राजेन्द्र सिंह, सहायक प्रबंधक	12.01.1988	31.01.2021 सेवानिवृत्त	33 वर्ष	मुख्यालय
2.	श्री प्रनब कुमार सामंता, लेखा सहायक	23.04.2014	31.01.2021 सेवानिवृत्त	7 वर्ष	कोलकाता
3.	श्रीमती देविका संतोष, सहायक प्रबंधक	06.01.1997	08.04.2021 त्यागपत्र	24 वर्ष	मुख्यालय
4.	श्रीमती शालिनी खन्ना, पर्यवेक्षक	09.03.1998	05.06.2021 त्यागपत्र	23 वर्ष	मुख्यालय
5.	श्री बलजिन्दर सिंह, उप-प्रबंधक	20.02.2018	30.06.2021 त्यागपत्र	3 वर्ष	मुख्यालय
6.	श्रीमती पूनम अरोड़ा, उप-प्रबंधक	16.11.1984	31.07.2021 सेवानिवृत्त	37 वर्ष	मुख्यालय
7.	श्रीमती क्लारा अब्राहम, उप-प्रबंधक	24.05.1985	31.08.2021 सेवानिवृत्त	36 वर्ष	बेंगलुरू
8.	श्री संदीप वी. भाले, उप-प्रबंधक	26.09.1989	31.08.2021 सेवानिवृत्त	32 वर्ष	चेन्नई
9.	श्री रतिलाल धनजी बारिया, शॉप सहायक	15.05.1984	31.08.2021 सेवानिवृत्त	37 वर्ष	मुख्यालय
10.	श्रीमती अनारो देवी, शॉप सहायक	08.02.1994	31.08.2021 सेवानिवृत्त	27 वर्ष	मुख्यालय
11.	श्री एन. जी. आनन्द, सहायक प्रबंधक	19.11.1988	07.09.2021 त्यागपत्र	33 वर्ष	कोलकाता
12.	श्री देव राम, शॉप सहायक	18.03.1989	30.09.2021 सेवानिवृत्त	32 वर्ष	मुख्यालय
13.	श्रीमती प्रीति वी. कांबली, सहायक प्रबंधक	22.03.1995	27.09.2021 त्यागपत्र	26 वर्ष	मुख्यालय
14.	श्री सुनील शर्मा, उप-प्रबंधक	27.05.1987	13.12.2021 त्यागपत्र	34 वर्ष	मुख्यालय
15.	श्रीमती अरूणा मोहित्ते, सहायक प्रबंधक	03.06.1994	17.12.2021 त्यागपत्र	27 वर्ष	मुख्यालय
16.	श्रीमती सुधा डब्ल्यू. बेदी, अपर महा प्रबंधक	08.01.1986	31.12.2021 सेवानिवृत्त	35 वर्ष	मुख्यालय

क्रम सं.	कर्मचारी का नाम एवं पदनाम	नियुक्ति की तारीख	सेवानिवृत्ति की तारीख	सेवाकाल	मुख्य विभाग
17.	श्री राजन खन्ना, उप-प्रबंधक	01.08.1984	31.01.2021 सेवानिवृत्त	37 वर्ष	मुख्यालय
18.	श्रीमती मालविका डोगरा, प्रबंधक	13.04.1994	28.02.2022 सेवानिवृत्त	28 वर्ष	मुख्यालय
19.	श्रीमती रीटा साहा, सहायक प्रबंधक	19.12.1994	28.02.2022 सेवानिवृत्त	28 वर्ष	कोलकाता
20.	श्रीमती अश्लेषा वैद्य, सहायक प्रबंधक	02.05.1995	31.03.2022 त्यागपत्र	27 वर्ष	कोलकाता
21.	सुश्री अश्मिका ए. जादव, सहायक प्रबंधक	20.03.1995	31.03.2022 त्यागपत्र	27 वर्ष	मुख्यालय
22.	श्री प्रमोद नागपाल, मुख्य महा प्रबंधक	05.06.1986	31.03.2022 सेवानिवृत्त	36 वर्ष	मुख्यालय
23.	श्री एलेक्स डीसूजा, सहायक प्रबंधक	04.07.1994	03.04.2022 त्यागपत्र	28 वर्ष	कोलकाता
24.	श्रीमती सारिका डी. रेवंडकर, सहायक प्रबंधक	21.03.1995	07.06.2022 त्यागपत्र	27 वर्ष	मुख्यालय
25.	श्री सुमित ऑडी, शॉप सहायक	21.09.1994	16.06.2022 त्यागपत्र	28 वर्ष	कोलकाता
27.	श्री मनोज कुमार, उप-प्रबंधक	01.10.1984	30.06.2022 सेवानिवृत्त	38 वर्ष	मुख्यालय

असामयिक निधन

(पहली जनवरी, 2021 से जून, 2022 के दौरान)

क्रम सं	कर्मचारी का नाम एवं पदनाम	नियुक्ति की तारीख	स्वर्गवास की तारीख
1.	श्रीमती मंजु चड्ढा सहायक प्रबंधक	20.06.1983	26.05.2021

कॉटेज परिवार अपने बीच से चिरनिद्रा में लीन होने वाली श्रीमती मंजु चड्ढा जी को हार्दिक श्रृद्धांजलि अर्पित करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि इनकी आत्मा को शांति प्रदान करे और इनके परिवार के लोगों को इस दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

कॉटेज

भारत में लघु चित्रकारी का विकास

मिनिएचर (Miniature) का मतलब होता है लघु। यह लैटिन शब्द 'मिनियम' से व्युत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ 'लाल रंग का शीशा' होता है। भारतीय उप-महाद्वीप में लघु चित्रकारी की लम्बी परम्परा रही है और इसका विकास कई शैलियों में हुआ है। **"समरांगण सूत्रधार"** नामक वास्तुशास्त्र में इसका विस्तृत रूप से उल्लेख मिलता है। इस शिल्प की कलाकृतियाँ सैंकड़ों वर्षों के बाद भी ऐसा लगता है कि ये कुछ वर्ष पूर्व ही चित्रित की गई हों।

लघु चित्रों की विशेषताएं

1. इस चित्रकारी में हस्तनिर्मित रंगों का इस्तेमाल किया जाता है और ये हस्तनिर्मित रंग सब्जियों, खनिजों, नील, शंख के गोले, कीमती पत्थरों, शुद्ध सोने और चांदी से बनाए जाते हैं।

2. इस चित्रकला में भारतीय शास्त्रीय संगीत के धुनों के साथ घनिष्ठ संबंध होता है।

3. इस तरह की चित्रकला में **मानव आकृति** एकपृष्ठीय (Side Profile) रूपरेखा के साथ दिखाई देती है जिसमें उभरी आँखें, नुकीली नाक और पतली कमर को विस्तार से दर्शाया जाता है।

भीमबेटका शैलाश्रय में जिस प्रकार की चित्रकारी देखने को मिलती है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि लघु चित्रकारी का विकास 30,000 वर्ष पहले ही हो गया था, इसलिए हम कह सकते हैं कि यह प्रागैतिहासिक कला है। भारत में और भी ऐसे शैलाश्रय हैं जहाँ पर जानवरों, नृत्य और शिकार के शुरुआती साक्ष्य जैसे विषयों को चित्र के माध्यम से दर्शाया गया है - उदहारण के तौर पर **अजंता गुफा चित्रकारी** (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 5 वीं शताब्दी ईस्वी), **मध्य प्रदेश की बाग गुफाएं।**

लघु चित्रकला का विकास वास्तविक रूप से 9वीं और 11वीं शताब्दी के बीच में हुआ है। इस तरह की चित्रकला के लिए पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों को श्रेय दिया जा सकता है। शुरुआत में इस तरह की चित्रकारी ताड़ पत्र या **चर्मपत्र** पर की जाती थी फिर बाद में कागज पर होने लगी। इन चित्रों की विशेषता **लहरदार रेखाएं और शांत पृष्ठभूमि** होती है। चित्रों में ज्यादातर अकेली आकृतियाँ होती हैं और कदाचित ही समूह में पाए जाते हैं। पाल साम्राज्य के दौरान इन्हें बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिए इसका प्रयोग किया जाता था। इसलिए बौद्ध धर्म के वज्रयान शाखा के समर्थकों ने इस चित्रकला को समर्थन दिया और संरक्षण भी दिया। कृष्ण लीला, राग रागिनी, नायिका भेद, ऋतु चित्र (मौसम), पंचतंत्र जैसे विषयों पर भी इस तरह की चित्रकारी की जाती रही है।

लघु चित्रकारी और मुग़ल शासक

अकबर के शासन काल में, लघु चित्रकारी को विभागीय समर्थन मिला क्योंकि अकबर ने दस्तावेजों के सुलेखन के लिए एक पूरे विभाग की स्थापना की थी। इस दौर में कलाकारों को अपनी तरह की शैलियों के विकास के लिए पूरी छूट दी गयी थी। चित्रकला को अकबर अध्ययन और मनोरंजन का साधन के रूप में देखता था। उसके अनुसार चित्र विषय का व्यवहार दर्शाता है और सजीव चित्र बनाने वालों को नियमित रूप से पुरस्कृत भी किया करता था। अकबर काल में **त्रिआयामी चित्रकला और अग्रदृश्यांकन** का व्यापक प्रयोग किया जाता था।

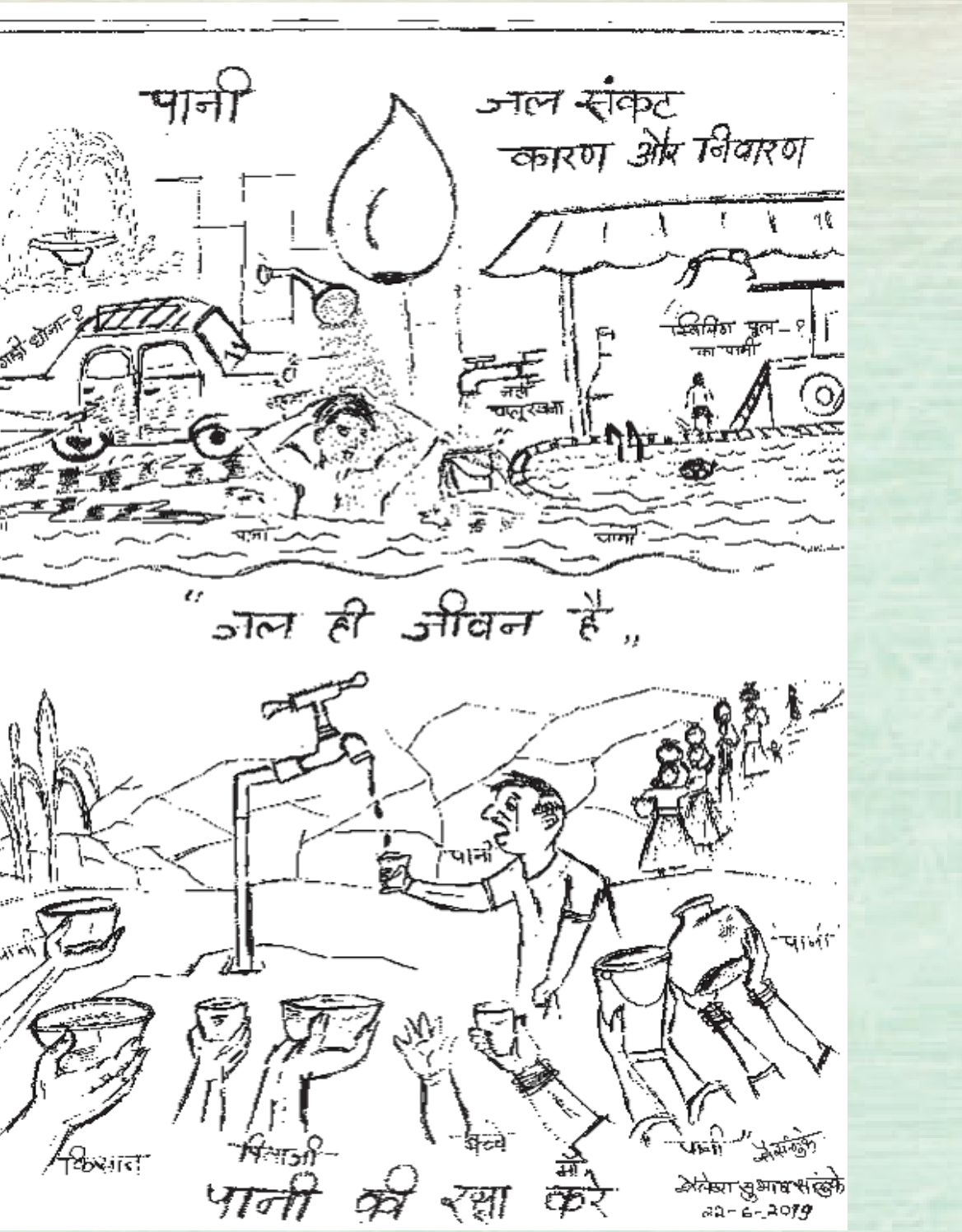

पानी
जल संकट
कारण और निवारण
"जल ही जीवन है"
पानी की रक्षा करें
22-6-2019

माननीय वस्त्र राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश 14 जून, 2022 को श्री यू.पी. सिंह, सचिव (वस्त्र मंत्रालय), श्री शांतमनु, आईएएस विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) और सीसीआईसी अध्यक्ष, श्री सोहन कुमार झा, वरिष्ठ निदेशक, क्राफ्ट म्यूजियम, कमोडोर महेंद्र वीर सिंह नेगी, एनएम (सेवानिवृत्त) , प्रबंध निदेशक, सीसीआईसी और मंत्रालय एवं सीसीआईसी के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में नेशनल क्राफ्ट म्यूजियम में "द लोटा शॉप" का उद्घाटन करते हुए।

माननीय सचिव, श्री उपेंद्र प्रसाद सिंह, आईएएस, वस्त्र मंत्रालय 9 मार्च, 2022 को सैन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज एम्पोरियम, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ में श्री विजॉय कुमार सिंह, आईएएस, अतिरिक्त सचिव (वस्त्र मंत्रालय), श्री शांतमनु, आईएएस, विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) / अध्यक्ष सीसीआईसी और कमोडोर महेंद्र वीर सिंह नेगी, एनएम (सेवानिवृत्त), प्रबंध निदेशक, सीसीआईसी की उपस्थिति में हथकरघा एक्सपो का उद्घाटन करते हुए।

श्री शांतमनु, आईएएस, विकास आयुक्त (हस्तशिल्प)/ अध्यक्ष सीसीआईसी का 9 मार्च, 2022 को सैन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज एम्पोरियम, जवाहर व्यापार भवन, जनपथ में हथकरघा एक्सपो के उद्घाटन के अवसर पर कमोडोर महेंद्र वीर सिंह नेगी,एनएम(सेवानिवृत्त),प्रबंध निदेशक, सीसीआईसी गुलदस्ता देकर स्वागत करते हुए।

सैन्ट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड

आईएसओः 9001: 2015 प्रमाणित कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम, वस्त्र मंत्रालय)
सीआईएन- यू74899डीएल1976जीओआई008069

कॉटेज के शोरूम

नई दिल्ली

जवाहर व्यापार भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : 011-23320439
ई-मेल : gmmktg@cottageemporium.in

कॉटेज द्वारा संचालित लोटा सोवेनियर शॉप,
राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय एवं हस्तकला अकादमी,
भैंरो मार्ग, प्रगति मैदान, नई दिल्ली - 110 001
दूरभाष : 011-20841113

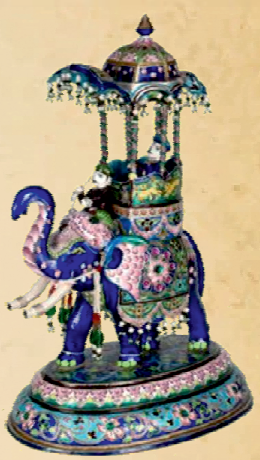

बेंगलुरु

सं 44, प्रथम तल, बीडीए कॉमर्शियल कॉम्पलेक्स,
एचएसआर लेआउट, तृतीय ब्लॉक, बेंगलुरु-560 102
दूरभाष : 080-25725660
ई-मेल : ccicibng@gmail.com

चेन्नई

टेंपल टावर, 672, अन्ना सलाई, नंदनम,
चेन्नई-600 035
दूरभाष : 044-24330898
फैक्स : 044-24330226
ई-मेल : cciciche@yahoo.co.in

कोलकाता

मैट्रोपोलिटन बिल्डिंग, भू-तल, 7,
जवाहर लाल नेहरू रोड, चौरंगी, कोलकाता-700 013
दूरभाष : 033-22287750, 22284139
फैक्स : 033-22283205
ई-मेल : ccickol@rediffmail.com

सिकंदराबाद

प्रथम तल , मिनर्वा कॉम्पलैक्स, सरोजिनी देवी रोड़,
सिकंदराबाद, तेलंगाना राज्य - 500 003
दूरभाष : 040-27805720
ई-मेल : ccichyd1@gmail.com

वाराणसी

म्यूज़ियम शॉप, दीनदयाल हस्तकला, संकुल बड़ा लालपुर,
चांदमारी, वाराणसी, उत्तर प्रदेश - 221 003
दूरभाष : 09415617747

गुजरात

शॉप नं0-04,भू-तल, एकता मॉल, केवड़िया, जिला - नर्मदा,
गुजरात - 393 151
दूरभाष : 09714838862

हैदराबाद

सालारजंग म्यूज़ियम शीघ्र खुल रहा है ।

www.thecottage.in